

SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 21 • ISSUE 02 • APRIL 2022

हिन्दी मासिक

अप्रैल 2022

# सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

## रोज़ा

ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फर्ज़ किये गये जैसा कि तुम से पहले लोगों पर  
फर्ज़ किये गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ । (सूर : बकरह 183)



एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त

हज़ारत मैलाना सै० मुहम्मद रबे हसनी नदवी  
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक

मु० गुफ़रान नदवी  
उप सम्पादक  
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं० 93  
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,  
लखनऊ – 226007

0522-2740406 (8:00 am to 1:00 pm)  
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com  
<http://sachcha-rahi.nadwa.in/>  
[www.nadwatululema.org](http://www.nadwatululema.org)

### सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर	

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

**SACCHA RAHI**

**SACCHA RAHI**

A/c. No. 10863759642

IFS Code: SBIN0000125

Swift Code: SBINNB157

State Bank of India,  
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ्तर  
के फोन नम्बर अथवा ई-मेल पर  
खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य  
सूचित करें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफ्सेट प्रिंटिंग प्रेस से मुक्ति एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।  
Designing & Composing by: Qamaruzzama-9452295052

# हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अप्रैल, 2022

वर्ष 21

अंक 02

## तक्वा और परहेज़गारी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलौहि  
व सल्लम से पूछा गया कि कौन सी चीज़  
सबसे ज्यादा जन्मत में ले जाने वाली है ?  
आप सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम ने  
फरमाया:- वह तक्वा (परहेज़गारी) और  
अच्छे अस्त्रलाक़ हैं फिर आप सल्ल० से  
पूछा गया कि कौन सी चीज़ सबसे ज्यादा  
जहन्म में ले जाने वाली है ? आप  
सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम ने इस्ताद  
फरमाया:- मुँह और शरमगाह (गुप्तांग)।  
(इन्हे माजा)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली  
लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप  
जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते  
में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर  
के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

## विषय एक दृष्टि में

कुर्अन की शिक्षा.....	मौलाना बिलाल अब्दुल हर्र हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें.....	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हर्र हसनी रह0	07
खैर व बरकत का महीना .....	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	10
हम रमज़ान कैसे गुज़ारें.....	हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	13
भारत के अतीत में मुस्लिम .....	सैयद सबाहुदीन अब्दुर्रहमान	18
मौजूदा हालात की रोशनी .....	मौलाना बिलाल अब्दुल हर्र हसनी नदवी	20
नैतिक प्रशिक्षण का शुद्ध मास .....	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी रह0	22
रमज़ान: नेकियों का सीज़न .....	जमाल अहमद नदवी	25
आपके प्रश्नों के उत्तर .....	मुफ्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	29
घरेलू मसायल.....	मौलाना मुहम्मद बुरहानुदीन संभली रह0	32
ठण्डा पानी एक बड़ी नेअमत.....	मौलाना तक़ी उस्मानी	34
ईदुल फित्र खुशी का दिन.....	मुफ्ती रहमतुल्लाह नदवी	37
उर्दू सीखिए.....	इदारा	38
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाट्स.....	इदारा	39
अहले खैर हज़रात की खिदमत में.....	इदारा	40

# क़ुअनि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अब्दुल हर्र हसनी नदवी

## सूर-ए-तौबा:-

### अनुवाद—

और महीनों का अपनी जगह से हटा देना कुफ़ में वृद्धि करना है, इनकार करने वाले इसी से गुमराह होते हैं वे किसी साल उसको हराम कर लेते हैं और किसी साल उसे जायज़ कर लेते हैं ताकि अल्लाह के हराम किये हुए महीनों की संख्या पूरा कर लें तो वे अल्लाह की हराम की हुई चीज़ को जायज़ करते हैं, उनके बुरे कर्म उनके लिए सुहाने बना दिये गये हैं और अल्लाह इन्कार करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता<sup>(1)</sup>(37) ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है जब तुम से कहा गया कि अल्लाह के रास्ते में निकलो तो तुम ज़मीन में ठस हो कर रह गये क्या तुम आखिरत के मुकाबले दुनिया ही की ज़िन्दगी में मग्न हो गये, तो दुन्या की ज़िन्दगी का सामान आखिरत के मुकाबले बहुत ही कम है(38) अगर तुम न निकले तो वह तुम्हें दुखद अज़ाब में

### बिस्मिल्लाहिरहमानिरहीम

ग्रस्त करेगा और तुम्हारे बदले दूसरी कौम को ला खड़ा करेगा और अल्लाह हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है<sup>(2)</sup>(39) अगर तुम उनकी मदद नहीं करते तो उनकी मदद अल्लाह ने उस समय की जब उनको काफ़िरों ने निकाल दिया, दोनों में एक जब कि वे दोनों गुफ़ा में थे जब वे अपने साथी से कह रहे थे कि दुःखी न हो अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने अपनी सकीनत (शांति) उन पर उतारी और ऐसी सेनाओं से उनको शक्ति दी जिन को तुमने न देखा और काफ़िरों की बात को नीचा किया और बात तो अल्लाह ही की ऊँची है और अल्लाह ज़बर्दस्त है हिक्मत वाला है<sup>(3)</sup>(40) निकलो हलके और भारी हो कर और अपने मालों और जानों से अल्लाह के रास्ते में जेहाद करो यही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो(41) अगर धन निकट होता और यात्रा हल्की होती तो वे ज़रूर आपके साथ हो लेते

लेकिन उन्हें यह कठिन दूरी दूर लगी और अब यह लोग अल्लाह की क़समें खाएंगे कि अगर हमारे वश में होता तो हम ज़रूर आपके साथ निकलते, यह अपने ही ऊपर मुसीबत ले रहे हैं और अल्लाह जानता है कि यह पक्के झूठे हैं<sup>(4)</sup>(42) अल्लाह आपको माफ़ करे आपने उनको अनुमति ही क्यों दी यहाँ तक कि सच्चे लोग आप पर ज़ाहिर हो जाते और झूठों को भी आप जान लेते<sup>(5)</sup>(43) वे लोग अपने मालों और जानों से जेहाद करने की छुट्टी तो आपसे नहीं लेते जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं और अल्लाह डरने वालों को खूब जानता है<sup>(6)</sup>(44) छुट्टी तो आपसे वे लोग लेते हैं जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल संदेह ग्रस्त हैं तो वे अपने संदेह में ही डावँ डोल हैं<sup>(45)</sup> और अगर उनका निकलने का इरादा होता तो उसके लिए कुछ तो सामान तैयार करते लेकिन

अल्लाह को उनका जाना पसंद ही न आया तो उसने उनको ठस कर दिया और आदेश हुआ कि (निःस्कत) बैठने वालों के साथ बैठे रहो<sup>(4)</sup>(46) अगर वे तुम्हारे साथ निकलते भी तो तुम्हारी कठिनाइयाँ बढ़ाते और तुममें फितना डालने की चिन्ता में तुम्हारे बीच दौड़ते फिरते और तुममें उनके कुछ जासूस मौजूद हैं और अल्लाह अत्याचारियों से खूब अवगत है(47)।

### **तपसीर (व्याख्या):—**

1. काफिरों ने एक गुमराही यह निकाली थी कि आपस में लड़ते, अगर मोहर्रम का महीना आ जाता तो कहते कि इस बार “सफर” पहले आ गया, मोहर्रम बाद में आएगा और इस बहाने से मोहर्रम में भी लड़ते रहते और हराम को हलाल करते तो इस तरह चार महीने तो बाकी रखते लेकिन उनको अपनी मन मानी से इधर से उधर करते रहते।

2. अब यहाँ से ग़ज़व— ए—तबूक का उल्लेख शुरू हो रहा है और इसमें निकलने पर प्रेरित किया जा रहा है और न निकलने पर उसके अज़ाब से डराया जा रहा है, यह ग़ज़वा सन् 9 हिजरी में घटित हुआ, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम को मालूम हुआ कि शाम का ईसाई बादशाह रोम के सहयोग से हमला करने वाला है, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आगे बढ़ कर रोकना उचित समझा, वह तीव्र गर्मी का मौसम था फल पक रहे थे छाँव अच्छी थी इस परिस्थिति में मुनाफ़िक तो बहाना करके निकल लिए कुछ ईमान वालों से भी सुस्ती हुई जिनको बाद में बड़ा पछतावा हुआ।

3. मान लो अगर तुम मदद नहीं करते तो अल्लाह ने उनकी उस समय मदद की जब उनके साथ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाह अन्हु थे, यह हिजरत की घटना है जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बक्र के साथ सौर गुफा में थे और मुश्ऱिक सामुद्रिक विद्या के जानकारों की सहायता से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकट पहुँच गए लेकिन अल्लाह के आदेश से गुफा के मुख पर मकड़ी ने जाला लगा दिया और कबूतरी ने अण्डे दे दिए वे देख कर बोले कि यहाँ तो वर्षों से कोई दाखिल नहीं हुआ हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके कदमों को देख लिया

और कहा कि अल्लाह के पैगम्बर! अगर उन्होंने नीचे झाँका तो हमें देख लेंगे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा “उन दो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिनका तीसरा अल्लाह है”, बस मुश्ऱिक असफल वापस हुए, अल्लाह ने दिखा दिया कि उसने अपनी सबसे कमज़ोर सृष्टि से बड़े—बड़े मज़बूत किलों से बढ़ कर सुरक्षा का काम लिया और यहीं से ईमान वालों को समझाया जा रहा है कि तुम अपनी कमी व कमज़ोरी को न देखो, काम लेने वाला अल्लाह है, बस तुम हर हाल में सवार, पैदल, निर्धन व धनी निकल पड़ो और जेहाद करो, अगर तुमने उपरोक्त घटनाओं और तथ्यों पर विचार कर लिया तो तुम उसकी बेहतरी समझ लोगे।

4. यह मुनाफ़िकों का वर्णन है अगर उनको सुविधा पूर्वक धन की आशा होती तो ज़रूर आपके साथ निकलते लेकिन कठिनाइयों को देख कर झूठी करमें खा खा कर बहाने करने लगे फिर वापसी के बाद उलटी करमें खा कर अपने ही ऊपर मुसीबत बढ़ा रहे हैं।

**शेष पृष्ठ...21...पर**

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ० हकीम सै० अब्दुल हई हसनी रह०

तीन दिखावा करने वालों  
का अंजामः—

हज़रत अबू हुरैरा रजि० बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को फरमाते हुए सुना कि सब से पहला आदमी जिसके खिलाफ क़्यामत के दिन फैसला होगा, वह आदमी होगा जो मैदाने जिहाद में शहीद किया गया होगा, उसे खुदा के सामने लाया जाएगा, खुदा उसको बताएगा कि मैंने तुझ पर क्या—क्या एहसान किए थे, वह अल्लाह के एहसानों को पहचान लेगा, तो अल्लाह तआला पूछेगा कि तुम ने इन एहसानों का क्या हक अदा किया? वह जवाब देगा कि मैंने आपके रास्ते में जिहाद किया, यहाँ तक कि शहीद कर दिया गया, अल्लाह तआला कहेगा कि तूने झूठ कहा, तूने तो जिहाद में इसलिए हिस्सा लिया था ताकि तेरी बहादुरी के चर्चे हों और तुम्हारा यह मकसद हासिल हो चुका और दुनिया में तेरी बहादुरी के चर्चे

हुए। फिर उसके लिए अल्लाह तआला का हुक्म होगा और वह औंधे मुँह घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। उसी के साथ एक दूसरा आदमी होगा जिसने इल्मे दीन हासिल किया होगा, दूसरों को उसकी शिक्षा—दीक्षा भी दी होगी और कुर्�আন भी खूब पढ़ा होगा, उसको भी खुदा के सामने पेश किया जाएगा, अल्लाह तआला उसको भी अपने एहसानों की याद दिलाएगा, वह सभी को स्वीकार करेगा, अल्लाह तआला उससे पूछेगा बता तूने मेरे इन एहसानों से क्या काम लिया? और उनको किस मकसद को हासिल करने में खर्च किया वह कहेगा ऐ अल्लाह! मैंने आपका ज्ञान हासिल किया और दूसरों को सिखाया, और आप ही की खुशी के लिए आपकी किताब कुर्�আন पाक में व्यस्त रहा, अल्लाह तआला कहेगा तूने यह बात झूठ कही, तूने तो इल्मे दीन इस लिए पढ़ा था कि आलिम व कारी कहा जाए, तो

तेरा मकसद तुझे हासिल हो चुका और दुनिया में तेरे आलिम व आविद और कारी होने का चर्चा खूब हो चुका वह भी औंधे मुँह घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। और उसी के साथ एक तीसरा आदमी भी होगा जिसको अल्लाह तआला ने दुनिया में भरपूर धन—दौलत से नवाज़ा होगा और हर तरह का माल उसको दिया होगा, वह भी खुदा के सामने पेश किया जाएगा, अल्लाह तआला उसको भी अपने एहसान बतलाएगा कि मैंने तुझ पर यह—यह एहसान किए वह सभी को स्वीकार करेगा, फिर अल्लाह तआला उस से पूछेगा तूने मेरे इन एहसानों से क्या काम लिया? वह कहेगा ऐ खुदा! जिस—जिस रास्ते में और जिन—जिन कामों में तुझे खर्च करना पसन्द है मैंने तेरा दिया हुआ माल उन सभी रास्तों में खर्च किया, अल्लाह तआला फरमाएगा, तूने झूठ कहा, हकीकत में ये सब कुछ तूने

इसलिए किया था कि दुनिया में तू दानी मशहूर हो और तेरे दानी और धन—दौलत के खूब चर्चे हों, तो तेरा यह मक़सद हासिल हो गया और दुनिया में तेरे दानी होने और धन—दौलत लुटाने के खूब चर्चे हुए, फिर अल्लाह तआला की तरफ से उसके लिए भी हुक्म होगा और वह भी औंधे मुँह घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

(मुर्सिलम)

**केवल वही कर्म मान्य है जो अल्लाह के लिए होः—**

हज़रत अबू उमामा रजियल्लाहु अन्हू बयान करते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाजिर हुआ और पूछा: ऐ अल्लाह के नबी! आप ऐसे आदमी के बारे में क्या कहते हैं जिसने जिहाद किया और उसने जिहाद के द्वारा सवाब और शोहरत चाही, उसको क्या मिलेगा? तीन बार उस आदमी ने अपने इस प्रश्न को दोहराया, और हर बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह कहते रहे कि उसको कुछ भी नहीं

मिलेगा, फिर आप सल्ल0 ने फरमाया अल्लाह तआला उसी अमल को कुबूल करता है जो शुद्ध रूप से केवल उसी के लिए किया गया हो और उसी की खुशी की तलाश मक़सद हो। (अबू दाऊद व नसई)

**अल्लाह की खुशी निष्काम भाव से उसकी उपासना तथा आज्ञा पालन में हैः—**

हज़रत अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हू बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो आदमी केवल एक खुदा की खातिर और किसी अन्य को उसकी इबादत में साझी किए बिना इस दुनिया से जुदा हुआ, नमाज़ कायम करता रहा, ज़कात देता रहा, वह इस हाल में मौत पाएगा कि उससे अल्लाह राजी होगा।

(इब्ने माजा)

**दुनियावी फायदे के लिए दीनी इल्म (धार्मिक ज्ञान) सीखने वाले का बुरा अंजामः—**

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हू बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया

जो आदमी वह ज्ञान जिससे अल्लाह की खुशी हासिल की जाती है, उसको दुनिया के किसी फायदे के लिए सीखता है तो वह क़्यामत के दिन जन्नत की खुशबू तक न पाएगा। (अबू दाऊद)

**अल्लाह हर प्रकार की साझेदारी से पवित्र और महान हैः—**

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हू बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि अल्लाह तआला का फरमान है ‘जो आदमी ऐसा अमल करे जिसमें मेरे साथ किसी और को भी शरीक करे (साझी बनाए) तो उसको और उसके शिर्क (साझीदार) दोनों को छोड़ देता हूँ’। (मुस्लिम)

**बुजुर्गों और अल्लाह वालों की वेश—भूषा में आ कर धंधा करने वालों की इबरतनाक सज़ाः—**

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हू बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आखिरी ज़माने में कुछ

ऐसे मक्कार लोग पैदा होंगे जो दीन की आड़ में दुनिया का शिकार करेंगे, वो लोगों पर अपनी बुजुर्गी व मुहताजी जाहिर करने के लिए भेड़ों की खाल का वस्त्र पहनेंगे, उनकी जुबानें शहद से ज़्यादा मीठी होंगी और दिल भेड़िये के समान होंगे, उनके बारे में अल्लाह का फरमान है, ये लोग मेरे ढील देने से और तुरन्त पकड़ न करने से धोखा खा रहे हैं, या मुझसे निडर हो कर, मरे मुकाबले में आने की हिम्मत कर रहे हैं, मुझे अपनी कसम है कि मैं इन मक्करों पर उन्हीं में से एक आजमाईश खड़ी करूँगा जो उनके अक़लमन्दों और विद्वानों को भी हैरान व परेशान बना कर छोड़ेगी। (तिर्मिजी)

### तीन बातें दिल के रोग की दवा हैं:-

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम करे जिसने मेरी बात सुनी और उसे बिना किसी कमी,

ज़्यादती और काट-छाँट के दूसरों तक पहुँचाया। तीन बातें ऐसी हैं कि उनके होते हुए मुसलमानों का दिल धोखा नहीं खाता।

1. अमल को अल्लाह के लिए शुद्ध करना।
2. मुसलमानों के रहनुमाओं के साथ अच्छा व्यवहार करना।
3. ईमान वालों की जमाअत से अलग न होना।

क्योंकि उनकी दुआएं उन लोगों को भी अपने दामन में ले लेती हैं जो उनके पीछे होते हैं। जिस आदमी का मक़सद केवल दुनिया कमाना होगा, उस पर अल्लाह गरीबी और मुहताजी का डर सवार कर देगा, उसकी जायदाद को छिन्न-भिन्न कर देगा, और मिलेगा उसे उतना ही जितना कि उसके भाग्य में लिखा जा चुका है, और जिस आदमी का मक़सद आखिरत कमाना होगा, अल्लाह तआला उसके दिल को मालदार कर देगा, और दुनिया जलील व ख्वार (तुच्छ और तिरस्कृत) हो कर उसके पैरों पर गिरेगी। (मुस्नदे अहमद, दारमी, इब्ने माजा)

अल्लाह तआला दिलों को देखता है और उसी के मुताबिक़ फैसला करता है:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह न तुम्हारे शरीर को देखता है और न रूप को, बल्कि उसकी नज़र तुम्हारे दिलों पर होती है। (मुस्लिम)

**आमाल (कर्मों) की बुनियाद नियतों पर है:-**

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि इन्सान के तमाम कर्म नियतों से जुड़े होते हैं। जो अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिज़रत करेगा तो उसकी हिज़रत अल्लाह और उसके रसूल के लिए होगी, और जो दुनिया हासिल करने के लिए करेगा या किसी औरत से शादी करने के लिए करेगा तो उसकी हिज़रत उसी के लिए होगी जिसके लिए वतन को छोड़ा है।

(बुखारी व मुस्लिम)



# ऐरे व बरकत का महीना, रमज़ान शरीफ़

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

‘ऐ लोगों जो ईमान लाए हों, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिए गए जिस तरह तुम से पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किए गए थे। इससे उम्मीद है कि तुम में परहेज़गारी का गुण पैदा होगा’।

(सूरः बक़रा—183)

इस्लामी इबादात में सबसे पहले नमाज़, उसके बाद ज़कात, रोज़ा और हज़ है, इन इबादात की बुन्यादी हैसियत है यह इबादतें हर ईमान वाले पर फ़र्ज अर्थात् अनिवार्य हैं, ज़कात अपनी शर्तों के साथ साल में एक बार फ़र्ज़ है, और हज़, ज़िन्दगी में केवल एक बार अपनी शर्तों के साथ फ़र्ज़ है, रोज़ा, साल में एक माह रमज़ान के महीने में रखा जाता है, तमाम इस्लामी इबादतों का सारांश और तत्व यह है कि इन्सान हर छोटे बड़े गुनाह से अपने को बचाए ताकि वह वास्तव में अल्लाह का आज्ञाकारी बन्दा बन सके, रोज़ा एक ऐसी इबादत है जो संगठित प्रोग्राम के साथ एक माह तक चलता है,

यदि रमज़ान शरीफ़ को पूरे माह अल्लाह व रसूल के आदेशों के अनुसार व्यतीत किया जाए तो इन्सान के जीवन पर दूरगामी परिणाम संकलित होते हैं। इस मुबारक महीने की महत्ता और महानता का अन्दाज़ा इससे लगाइये कि रमज़ान शरीफ़ के आने से पहले, माहे शाबान की आखिरी तारीखों में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लू ने एक लम्बा खुल्बा दिया जिसमें आप सल्लू ने विस्तार पूर्वक रमज़ान सम्बन्धित बातें फ़रमाईः—

ऐ लोगो! तुम पर एक महान और बरकत वाला महीना आने वाला है जिसमें एक रात शबे कद्र हज़ार महीनों से बेहतर है इस महीने के रोज़े अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ किये हैं और उसकी रातों की नमाज़ तरावीह को नफ़ल इबादत निश्चित किया है, जिसका बहुत बड़ा सवाब रखा है, जो शख्स इस महीने में अल्लाह की प्रसन्नता और उसका कुर्ब निकटता प्राप्त करने के लिए कोई गैर फ़र्ज़ इबादत यानी

सुन्नत या नफ़ल अदा करेगा तो उसको दूसरे ज़माने के फ़र्ज़ों के बराबर उसका सवाब मिलेगा और इस महीने में फ़र्ज़ अदा करने का सवाब दूसरे ज़माने के सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर मिलेगा, यह सब्र का महीना है और सब्र का बदला जन्नत है यह सहानुभूति और ग़म खाने का महीना है और यही वह महीना है जिसमें मोमिन बन्दों के रिज़क (जीविका) में बढ़ोत्री की जाती है, जिसने इस महीने में किसी रोज़ेदार को इफ़तार कराया तो उसके लिए गुनाहों की माफ़ी और दोज़ख की आग से आज़ादी का ज़रिआ होगा और उसको रोज़ेदार के बराबर सवाब दिया जाएगा, और यह केवल अल्लाह की ओर से कृपा दया होगी, यह नहीं कि रोज़ेदार के सवाब में से कुछ कमी करके उस इफ़तार कराने वाले को सवाब दिया जाए बल्कि रोज़ेदार को अपने रोज़े का सवाब पूरा पूरा मिलेगा। इफ़तार की मात्रा थोड़ी हो या बहुत, इसके बावजूद सवाब पूरा

मिलेगा। खुत्बे का सिलसिला जारी रखते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:-

इस महीने का पहला भाग रहमत (करुणा और दया) दूसरा भाग मग़फिरत (मआफ़ी) का तीसरा अन्तिम भाग जहन्नम की आग से आज़ादी का है, जो शख्स अपने गुलाम और नौकर से इस महीने में काम हलका कर देगा, अल्लाह तआला उसके गुनाह बरखा देंगे और उसको जहन्नम की आग से आज़ाद कर देंगे— बस तुम रमज़ान के महीने में चार काम ज़ियादा किया करो, दो वह जिनसे तुम अपने मालिक को राजी कर सकोगे और दो वह जिनकी तुम को स्वयं आवश्यकता है। पहले दो काम जिनसे अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) तुम को प्राप्त होगी यह हैं कि खुदा के एक होने की गवाही दो और उससे अपने गुनाहों की मग़फिरत और माफ़ी मांगो यानी कलिम—ए—तौहीद और इस्तिग़फ़ार को इस महीने में ज़ियादा से ज़ियादा पढ़ो और दूसरी दो बातें जिनकी तुम को ज़रूरत है यह हैं कि अल्लाह से जन्नत का सवाल करो और

दोज़ख से पनाह मांगो, और जो शख्स किसी रोज़ेदार को इस महीने में पानी पिलाएगा अल्लाह तआला उसको मेरे हौज़ कौसर से ऐसा सैराब फ़रमाएगे कि जन्नत में दाखिल होने तक उसको प्यास नहीं लगेगी। (बैहकी)

रोज़ा इस्लामी इबादात का तीसरा स्तम्भ है, किसी बिल्डिंग में स्तम्भ की हैसियत बुन्यादी होती है बिना स्तम्भ के कोई इमारत खड़ी नहीं हो सकती, रोज़े को अरबी भाषा में “सौम” कहते हैं जिसका शाब्दिक अर्थ रुकने और चुप रहने के हैं, कुछ उलमा के कथन के अनुकूल कुरआन पाक में इसको कहीं कहीं “सब्र” भी कहा गया है जिसका अर्थ ज़ब्ते नफ़स (सहन शीलता) और साबित क़दम दृढ़ता है, इन शब्दों से स्पष्ट होता है कि इस्लाम की भाषा में “रोज़े” का आशय क्या है? अपने आप को नफ़सानी और हैवानी ख़ाहिश से रोकने का नाम “रोज़ा” है। मुफ्ती—ए—आज़म मौलाना मुहम्मद शफ़ी साहब रह0 के शब्दों में “सौम” का अर्थ “इम्साक”, यानी रुकने और बचने के हैं और

शरीअत की परिभाषा में खाने पीने और औरत से संभोग करने से रुकने और बाज़ रहने का नाम “सौम” है, बशर्ते कि वह तुलु—ए—सुबह सादिक से ले कर सूरज ढूबने तक निरंतर रुका रहे, और नीयत रोज़े की भी हो, इसलिए अगर सूरज ढूबने से एक मिनट पहले भी कुछ खा पी लिया तो रोज़ा नहीं हुआ, इसी तरह अगर उन तमाम चीज़ों से परहेज़ तो पूरे दिन पूरी एहतियात से किया, मगर नीयत रोज़े की नहीं की तो भी रोज़ा नहीं हुआ।

रोज़े की हालत में खाने पीने और यौन सम्बन्धी कामों से अपने को सुरक्षित रखने के अलावा, ज़बान पर बहुत ज़ियादा कन्ट्रोल करने की ज़रूरत है, अन्जाने पन में बहुत सी ग़लत बातें ज़बान से निकल जाती हैं जिससे रोज़ा ख़राब हो जाता है। आम हालात में झूठ और ग़ीबत से परहेज़ करना चाहिए, रोज़े की हालत में खास तौर पर, इसी तरह नमाज़ की पाबन्दी हर हाल में जरूरी है, लेकिन रोज़े की हालत में हर नमाज़, वक़्त की पाबन्दी के साथ जमाअत से अदा की जाए,

अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लू ने फ़रमाया:- रोज़ा दुनिया में शैतान और नफ़्स के हमलों और गुनाहों से बचाव के लिए और आखिरत में दोज़ख की आग से हिफ़ाज़त के लिए ढाल है और जब तुम में से किसी का रोज़ा हो तो चाहिए कि वह व्यर्थ और अश्लील बातें न बके और शोर हंगामा न करे और अगर कोई दूसरा उससे गाली गलौज या झगड़ा टण्टा करे तो कह दे कि मैं रोज़ेदार हूँ” इस फ़रमाने नबी से आपने समझ लिया होगा कि रोज़ा कितना पवित्र और सैद्धान्तिक अमल है, यदि कोई इन्सान अल्लाह को राज़ी करने के लिए और सवाब की नीयत से पूरे सिद्धान्तों के साथ पूरे एक माह रमज़ान के रोज़े रखता है तो उसको गुनाह के कामों से नफ़रत हो जाएगी और नेकी के रास्ते पर चलना आसान हो जाएगा, और इन्सान की ज़िन्दगी तक्वे वाली हो जाएगी जो रोज़े का उद्देश्य है। जब अल्लाह का मोमिन बन्दा दिन भर की भूख प्यास के बाद अल्लाह के हुक्म से रोज़ा खोलता है तो फौरन खाने पीने पर टूट नहीं पड़ता

बल्कि पूरी शाने बन्दगी के साथ दुआ पढ़ता है, “ऐ अल्लाह मैंने तेरे ही लिए रोज़ा रखा, और तेरे ऊपर ईमान लाया और तेरे ही ऊपर भरोसा किया, और तेरे ही दिये हुए रिज़क से इफ़तार किया, दुआ के हर हर शब्द से रोज़ेदार अपने बन्दे होने का इक़रार करता है, और अल्लाह के उपकार और एहसान को स्वीकार करता है, रोज़ा ऐसी इबादत है और ऐसा अमल है जिसको केवल अल्लाह जानता और देखता है, दुनिया वालों की निगाहों से ओझल है, इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं जितना चाहूँगा उसका बदला दूँगा, रमज़ान का महीना खैर व बरकत से भरा हुआ है, हर समय अल्लाह की रहमतों की बारिश होती है, इसी महीने में अल्लाह तआला ने शबे क़द्र की रात रखी है, जो हज़ार महीनों से बेहतर है यानी इस मुबारक रात में जो इबादत की जाएगी उसका अज्ञ व सवाब हज़ार रातों की इबादत के अज्ञ व सवाब के बराबर होगा। कुर्�আন مজीد का रमज़ान शरीफ से विशेष सम्बन्ध है, चुनांचि सूरः बकरः आयत नं० 185 में

अल्लाह तआला ने फ़रमाया— रमज़ान वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्ग दर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और असत्य का अन्तर खोल कर रख देने वाली है। अतः अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाए, उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे” कुरआन पाक लौह महफूज़ से आसमाने दुनिया पर तमाम का तमाम इसी माह में नाज़िल हुआ और वहां से हस्बे मौका थोड़ा थोड़ा 23 साल के अर्से में नाज़िल हुआ, दूसरी आसमानी किताबें भी इसी महीने में नाज़िल हुई चुनांचि सुहफे इब्राहीमी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर रमज़ान की पहली या तीसरी तारीख को नाज़िल हुए हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को 6 रमज़ान को ज़बूर अता हुई और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को इन्ज़ील 12 या 13 रमज़ानुल मुबारक को मिली, जिससे मालूम होता है कि इस माह को क़लामे इलाही के साथ विशेष लगाव है।



# हम रमज़ान कैसे गुज़ारें

हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

एक मरतबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि मिम्बर के क़रीब हो जाओ सहाब—ए—किराम रज़ि0 मिम्बर के क़रीब हो गये। जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर के पहले दर्जे पर पहुंचे तो फरमाया (आमीन) जब दूसरे दर्जे पर पहुंचे तो फरमाया (आमीन) जब तीसरे दर्जे पर पहुंचे तो फरमाया (आमीन) जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुत्बे से फारिग़ हो कर नीचे उतरे तो सहाब—ए—किराम रज़ि0 ने अर्ज किया कि हमने आज आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिम्बर पर चढ़ते हुए ऐसी बात सुनी जो पहले कभी नहीं सुनी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उस वक्त जिबरील अलैहिस्सलाम मेरे सामने आये थे। (जब पहले दर्जे पर मैंने क़दम रखा तो) उन्होंने फरमाया! हलाक हो जाये वह शख्स जिसने रमज़ानुल मुबारक का महीना पाया, फिर भी

उसकी मग़फिरत न हुई। मैंने कहा आमीन। फिर जब मैं दूसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्होंने कहा कि हलाक हो जाये वह शख्स जिसके सामने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र हो और उसने दुरुद न पढ़ा। मैंने कहा: आमीन, जब तीसरे दर्जे पर चढ़ा तो उन्होंने कहा कि हलाक हो जाये वह शख्स जिसके सामने उसके वालदैन या उनमें से कोई एक बुढ़ापे को पाये और वह उनकी खिदमत करके जन्नत में न दाखिल हो जाये। मैंने कहा आमीन।

**रमज़ान मग़फिरत का महीना है—**

रमज़ान ऐसा सुनहरा अवसर है कि उसमें कोशिश करे तो एक रमज़ान सारे गुनाह बख्शावाने के लिए काफी है। जो शख्स रमज़ान के रोज़े रखे और यह यकीन कर के रखे कि अल्लाह तआला के तमाम वादे सच्चे हैं, और तमाम भले कामों पर बेहतर बदला अता फरमायेगा, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम ने फरमाया जो शख्स रमज़ान के रोजे ईमान व एहतिसाब के साथ रखे उसके अगले पिछले गुनाह बख्शा दिये जायेंगे। ईमान व एहतिसाब का मतलब ये है कि अल्लाह तआला के तमाम वादों पर यकीन कामिल हो और हर अमल पर सवाब की नीयत करे। और इख्लासो लिल्लाहियत और रिज़ाये इलाहि का हुसूल पेश नज़र हो और हर अमल के वक्त मर्ज़ी—ए—इलाही को देखे, ईमान व एहतिसाब ही है जो इंसान के अमल को फर्श से अर्श तक पहुंचा देता है। असलन इसी का अभाव है। मुसलमानों का असल मर्ज़ बद नियती नहीं बल्कि बेनियती यानी वह सिरे से नीयत ही नहीं करते, हम वुजू करते हैं मगर उसमें नीयत नहीं करते। हम दूसरे अरकाने दीन अदा करते हैं मगर ईमान व एहतिसाब हमारे पेशे नज़र नहीं रहता। जब बहुत से लोग किसी काम को करते हैं तो वह रस्म

बन जाती है रोज़े का एक आम माहौल होता है ऐसे में कोई इस अन्देशे से रोज़ा रखे कि हम रोज़ा न रखेंगे तो छुप कर खाने पीने से क्या फायदा? ये ख्याल आया तो रोज़े की रुह निकल गई। बीमारियों में भी अक्सर भूखा रहना पड़ता है सफर में भी अक्सर खाना नहीं मिलता, इसलिए रोज़े की खुसूसियत सिर्फ भूखा रहना नहीं है, रोज़े की हकीकत है कि अल्लाह के हुक्म की तामील में जो चीज़ें छोड़ने को कही गयी हैं उनको छोड़ देना, पहले हम ये कैफियत पैदा करें कि अल्लाह तआला बरहक है सवाब की लौलगी हो और दिल को तसल्ली हो कि सवाब मिल रहा है इसी में लुत्फ आये।

### आमाल की मक़बूलियत की अलामत व आसार—

किसी इबादत की खुसूसियत और उसकी मक़बूलियत की दलील ये है कि उसकी अदायगी से दिल के अन्दर हमदर्दी और विनम्रता का जज्बा पैदा हो लेकिन जब इसके उलट किब्रो गुरुर और अहंकार पैदा हो तो समझ

लेना चाहिए कि हमारी इबादत मक़बूल नहीं हुई। उसमें कभी रह गयी है। इसलिए उन चीज़ों को दूर करने के लिए ईमान व एहतिसाब को निगाह में रखना और उसका ख्याल जेहन में रहना ज़रूरी है। बे सोचे समझे बगैर नीयत के रोज़ा रख लेना, कोई और इबादत करना बे माना है। एक साहब फरमाने लगे मैं इसलिए रोज़ा रखता हूँ कि जो मज़ा इफ़तार के वक्त आता है वह दुनिया की किसी नेअमत में नहीं हालांकि उनका अल्लाह तआला पर ईमान भी नहीं था। हमें चाहिए कि हम दिन में कई बार नीयत को ताज़ा कर लिया करें। हर वक्त इस्तेहज़ार रखें रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इन्हे आदम के हर अमल पर उसको दस से 700 गुना तक सवाब मिलेगा अल्लाह ने फरमाया सिवाये रोज़ा के कि वह मेरे लिए है। और मैं ही उसका बदला दूँगा। ये बन्दा तमाम महबूब चीज़ें मेरे लिए छोड़ता है इसलिए मैं खुद ही बदला दूँगा।

### रोज़े आमाल में ताक़त पैदा करते हैं—

दूसरी बात यह है कि दीन के जितने भी अरकान हैं वह ताक़त पैदा करते हैं यानि एक इबादत दूसरी इबादत के लिए मददगार साबित होती है। और उसके लिए मदद का बाइस बनती है। जिस तरह से एक गिज़ा दूसरी गिज़ा के लिए मददगार साबित होती है। इसी तरह एक फर्ज़ की अदायगी दूसरे फराएज़ की अदाएगी में मुआविन साबित होती है। और उसको ताक़त फराहम करती है। ये बात नहीं है कि हर रुक्न अलग अलग है। हर एक की फर्ज़ियत और उसकी अहमियत तो बहर हाल अपनी जगह है। मगर एक दूसरे से अलग नहीं बल्कि एक दूसरे की मदद के लिए है इस तरह से रोज़ा साल के पूरे ग्यारह महीने की इबादत के लिए ताक़त पैदा करता है। रोज़े की वजह से दूसरी इबादत की अदाएगी में ज़ौको शौक पैदा होता है और तवानाई मिलती है।

### रोज़े का मक़सद नफ़्स पर क़ाबू पाना है—

तीसरी बात यह है कि रोज़े का मक़सद ये है कि नफ़्स

पर काबू पाया जाये और रोज़े की वजह से नफ्स पर काबू पाना आसान हो जाये, दीन का जौको शौक पैदा हो, इबादत की अदाएगी में शौक हो। अल्लाह तआला का इरशाद है अनुवाद: ऐ ईमान वालो रोज़े तुम पर फ़र्ज किये गये जैसे तुम से पहलों पर किये गये थे ताकि तुम तक़वा वाले हो जाओ। (यानि हर काम के करते वक़्त अल्लाह तआला की मर्जी का ख्याल रखा जाये) तक़वा का तर्जुमा बाज़ लोगों ने लिहाज़) से किया है। यानी हर काम के करते वक़्त उसका लिहाज़ रखा जाये कि ये काम अल्लाह तआला की मर्जी के मुताबिक है या नहीं? हलाल और हराम की तमीज़ हो जाए इस तरह से मश्क हो जाये कि फितरत बन जाये। जिस तरह से ईद के दिन आप खाने पीने में डिझिक महसूस करते हैं। इस वजह से कि आपको खाना पीना खिलाफ़े आदत मालूम होता है हालांकि ये अस्थायी चीज़ थी। इसी तरह से गुनाहों से बचने, मआसी से परहेज़, गीबतो बद गोई, गुस्सा व बुग्ज़ से परहेज इस तरह हो कि आपकी फितरत बन जाये। जो चीज़ दाईमी तौर पर हराम हैं उनको

करने में तो और भी ज़ियादा आपको चौकन्ना रहना चाहिए। रोज़े से ज़िन्दगी में तब्दीली होनी चाहिए आप रोज़ा रखें लेकिन गाली देना, गीबत करना, बद गोई, गुस्सा व बुग्ज़ न छोड़ें तो रोज़े से कोई फायदा नहीं।

असल बात तो यह है कि रोज़ा आपकी ज़िन्दगी के अन्दर वाज़ेह तब्दीली कर दे। रोज़े में आपने मआसी से इज्जिनाब किया है तो उस पर कायम रहिए और उन गुनाहों को बाद में भी न कीजिए जिनको आपने रोज़े की वजह से छोड़ दिया था। अगर रोज़े के खत्म होते ही तमाम मआसी में फिर मुब्तिला हो गये हैं तो इससे यही बात समझ में आएगी कि आपने रोज़ा तो रखा मगर रोज़ा मक़बूल नहीं हुआ।

आप इस तरह से रोज़ा रखिए कि कोई गैर मुस्लिम भी देखे तो समझे वाकई में रोज़ा रखते हैं और ये रमज़ान के दिन हैं पूरे एहतिराम को मलहूज़ रखा जाये। और तमाम तक़ाज़ों को पूरा किया जाए एक मरतबा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब तुम्हें से कोई शख्स रोज़ा रखे और उससे कोई

उलझने लगे तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं। नफ्स की तमाम कमज़ोरियों को दूर करे, रोज़ा इस तरह से न रखे कि गुस्से से भरा बैठा रहे और लोग उससे महज़ इस वजह से गुफ्तगू करने में खौफ करें कि भाई, इनसे गुफ्तगू न करो वरना ये बिगड़ जाएंगे। खाने में ज़र्रा बराबर भी नमक की कमी हो तो गुस्से की इन्तिहा कर दे, इन तमाम गुनाहों से परहेज़ करें। अगर रोज़े के तमाम तक़ाज़ों का लिहाज़ रखा गया तो उसका असर ग्यारह महीनों पर पड़ेगा और उसकी ज़िन्दगी में एक नुमायां तब्दीली होगी।

चौथी बात ये कि रोज़ा जिन चीज़ों से सुसज्जित किया गया है उसका लिहाज़ रखें रोज़े की ये मन्शा मालूम होती है कि अल्लाह तआला की तरफ ज़ियादा से ज़ियादा मुतवज्जेह हुआ जाये। न तिलावत की, न सद्का, न खैरात किया न तरावीह पढ़ी, सिर्फ रोज़ा रख लिया उससे कोई फाएदा नहीं तौबा व इस्तिग़फार का एहतिमाम हो दुआ की तरफ ज़ियादा तवज्जो हो आखिरी शब में एहतिमाम से उठें क्योंकि उसकी ज़ियादा अहमियत है अल्लाह

तआला उस वक़्त पुकारता है कि है कोई मेरा बन्दा जो मुझे पुकारे और मैं उसको सुनूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस का बहुत एहतिमाम फरमाते थे।

### ख़ैरात व सद्का का महीना—

इस महीने में खैरात व सद्का भी ज़ियादा करें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस माह को नेकी व ग़म ख़्वारी का महीना बताया इसका मतलब ये है कि अल्लाह की तरफ ज़ियादा तवज्जो हो और सद्कात व खैरात में ज़ियादा हिस्सा लें। लोगों के हालात का सुराग़ लगा कर पता चालाएं और उनके यहाँ तोहफे और हदाया भेजें। अल्लाह के कितने बन्दे ऐसे हैं जिनको सिर्फ रोज़ा इफ़तार करने के लिए मस्जिद में मिल जाता है। वह भूखे रहते हैं इसलिए ऐसे ज़रूरत मन्द लोगों को पता लगा कर उनकी मदद की जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसका बड़ा ही एहतिमाम फरमाते थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक आता है कि लोगों में सबसे ज़ियादा दानवीर थे दूसरे मौके पर आता है कि

तूफान की तरह सख़ावत करते थे और उसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे और दिल खोलकर ग़रीबों बेवाओं और यतीमों की मदद करते थे।

### तौबा इस्तिग़फ़ार का महीना—

इन्सान को समझना चाहिए कि हमारी इबादत क्या, हम तो अल्लाह तआला के लायक कुछ भी इबादत नहीं कर सकते हम तौबा इस्तिग़फ़ार भी अच्छी तरह नहीं कर सकते। इसलिए हमें भूखों लाचारों और मिस्कीनों की मदद करनी चाहिए ताकि मुम्किन है कि अल्लाह के किसी बन्दे का दिल खुश हो जाए तो अल्लाह तआला इसी को कुबूल फरमा ले और हमारा मकसद पूरा हो जाये हमारी इबादत हमारी तिलावत हमारी नमाज़ तो लायके मक़बूलियत नहीं लेकिन अल्लाह की राह में कुछ खर्च करने से मुम्किन है अल्लाह इसी को कुबूल फरमा ले। इस महीने में हमें पूरी तरह खैरात व सद्कात की तरफ मुतवज्जेह होना चाहिए और कमर कस लें कि इस महीने से पूरा फायदा उठाना है। हदीस शरीफ में आता है 'ऐ खैर के तलब करने

वाले आगे बढ़ और ऐ बुराई के तलब करने वाले पीछे हट' दूसरी तरफ आता है कि अल्लाह तआला क्यामत के दिन बन्दे से पूछेगा कि ऐ बन्दे मैं बीमार था तूने मेरी अ़यादत नहीं की मैं भूखा था तूने मुझे खाना नहीं खिलाया, बन्दा जवाबन अर्ज करेगा ऐ खुदावन्द कुदूस तू कैसे बीमार हो सकता है? तू कैसे भूखा हो सकता है? तो अल्लाह तआला फरमायेगा, मेरा फलां बन्दा बीमार था, अगर तू उसकी अ़यादत करता तो मुझे वहां पाता, फलां बन्दा भूखा था अगर तू उसे खाना खिलाता तो तू मुझे वहां पाता।

### ग़मगुसारी और ख़ैर ख़्वाही का महीना—

इसलिए ये ज़रूरी है कि जो मोहताज, बेवाएं, फुक़रा व मसाकीन हैं, उनकी मदद की जाये, ग़रीब लड़कियों की शादी करा दी जाये अगर हमने ऐसा न किया तो अल्लाह तआला क्यामत के दिन हम से पूछगछ करेगा और सख़त पकड़ करेगा, ये हमारा माल नहीं है जिसे हम खर्च करते हैं बल्कि ये अल्लाह की अमानत है। हम अगर उसको बेमहल खर्च करते हैं तो नाजाइज़ करते हैं। हमारे लिए

जाइज़ नहीं कि हम बेजा खर्च करें। हमें इसकी फिक्र करनी चाहिए कि कितनी बेवाएं और यतीम हैं कितने मोहताजो मसाकीन हैं जिन्हें ज़रूरत है हमें उन तमाम जगहों पर खर्च करना चाहिए जहाँ दूसरों की मदद व तआउन हो सके और अल्लाह तआला हमसे राज़ी हो सके।

भाई कलाम पाक में आज भी वही तासीर है मगर हमारे पास ज़बान नहीं हमारे सीनों में दिल नहीं जिससे सहाब—ए—किराम रज़ि० और अहलुल्लाह तिलावत करते थे। इसलिए पहले अपनी ज़बान को पाक करो और दिल साफ करो उसके बाद कलामुल्लाह की तिलावत करोगे तो उसका असर होगा अल्लाह वालों की ज़बान में असर होता है।

हज़रत हकीमुलउम्मत मौलाना थानवी रह० की किताब मवाएज़ में ये वाकिया मैंने पढ़ा है कि सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० के साहब जादे जब पढ़ लिख कर और डिग्रियाँ ले कर तशरीफ लाये तो उनका बयान हुआ और देर तक बयान हुआ रमज़ान का ज़माना था। उनको ये ख्याल हुआ कि मैंने

इतना लम्बा बयान किया कुरआन की आयतें पढ़ीं हदीसें पढ़ीं, बुजुर्गों के वाकिआत सुनाए मगर किसी पर कुछ असर न हुआ। आखिर क्या बात है? फिर उसके बाद हज़रत सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० खुद मजलिस में तशरीफ लाये आपने लोगों से मुखातिब हो कर फरमाया कि भाई मेरी सेहरी के लिए दूध रखा हुआ था रात में बिल्ली दूध पी गई, इस वजह से आज मैंने बगैर सेहरी के रोज़ा रख लिया इतना कहना कि सारे मजमे पर गिरया तारी हो गया सब लोग रोने लगे अ़जीब हाल हो गया। गिरया व ज़ारी का एक समां बन्ध गया। हज़रत शेख रह० की ज़बान में वह तासीर थी जिससे सारा मजमा मुतअस्सिर हो गया। तो आखिर क्या बात थी? बात यह थी कि आपके दिल में वह दर्दों सोज़ था जिसका असर लोगों के दिलों पर पड़ता था हज़रत शेखुल्लमशाइख ने अपने इस हाल से ज़ाहिर फरमाया कि इल्म और चीज़ है

बातिनी दौलत व कैफियत और चीज़ है। अल्लाह वाले जब बोलते हैं तो अल्लाह ही के लिए बोलते हैं इस वजह से उनके बोलने में असर होता है और जिस तरह अल्लाह वालों की ज़बान में असर होता है इसी तरह उनकी आँख में भी असर होता है। हक् तआला उनको नूरे फरासत अता फरमाते हैं जिससे हक् व बातिल में तमीज़ करते हैं।

हज़रत उस्मान गनी रज़ि० ने एक मरतबा फरमाया कि लोगों को क्या हो गया है कि हमारे पास इस हाल में आते हैं कि उनकी आँखों से ज़िना टपकता है। तो ये नूरे फिरासत ही था। हदीस शरीफ में बद निगाही को आँखों का ज़िना फरमाया गया है। उसका असर आँखों में रहता है। जिसको अल्लाह अपने मख़सूस बन्दों पर कभी जाहिर फरमा देते हैं। अल्लाह वालों के पास बहुत संभल कर जाना चाहिए भाई इख्लास ही अमल की रुह है एक शेअर याद आया है।

अमल की रुह है इख्लास जब तक ये न हासिल हो।  
नहीं आयेगी ईमानों अमल में तेरे ताबानी।।



# भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

## मुहम्मद बिन कासिम का अभियानः—

इन क्षेत्रों में अरब व्यापारी लगातार आते—जाते रहते जिन को समुद्री डाकुओं से सुरक्षित रखने के लिए वलीद बिन अब्दुल मलिक (705–715 ई0) के ज़माने में ईराक के शासक हज्जाज बिन यूसुफ़ (मृत्यु 95 हि0/713 ई0) ने मुहम्मद बिन कासिम को फारस से सिन्ध की ओर बढ़ने का आदेश दिया। यह सैनिक अभियान इस एतबार से बहुत ऐतिहासिक कहा जा सकता है कि सेना द्वारा चढ़ाई के बावजूद इसमें धार्मिक उदारता और खुले दिल का वही व्यावहारिक आदर्श प्रस्तुत किया गया जो इस्लाम की वास्तविक शिक्षा थी। यह तो नहीं कहा जा सकता है कि उसकी सेना सिन्ध में फूल बरसाती हुई प्रवेश हुई। उसकी सेना के तीरों से किसी को जख्म नहीं लगा, उसकी तलवारों से खून नहीं बहा, उसके आस्तीन उसके आग्नेयस्त्रों से बर्बादी और उसके घोड़ों की टापों से विनाश नहीं हुआ। लड़ाई तो हर हाल में

भयानक और खून बहाने वाली हुआ करती है। लेकिन देखना यह है कि खूनी और भयंकर लड़ाईयों के बाद उन अरब विजेताओं का व्यवहार अपनी अधीन जनता के साथ क्या रहा।

## हज्जाज बिन यूसुफ़ के उपदेशः—

सामान्य रूप से हज्जाज बिन यूसुफ़ एक बहुत क्रूर और निर्दयी शासक समझा जाता है लेकिन सिन्ध की विजय के सम्बन्ध में उसने मुहम्मद बिन कासिम को जो पहले पत्र में निर्देश भेजे उसमें और बातों के अतिरिक्त यह भी थीं: अल्लाह तआला से डरते रहो, सब्र करते रहो, दुश्मन के देश में पहुँचो तो खुली जगह में उतरो, जब हाथियों की सेना सामने आए तो अलग—अलग टुकड़ियाँ बना लो और जब वह आक्रमण करें तो एक जगह जमकर उन पर तीर बरसाओ, बरगस्तवान को शेर और हाथी जैसा बनाओ।

हमेशा कुरआन की तिलावत में लगे रहा करो, दुआएं पढ़ते रहो। महान और ताक़तवर

अल्लाह का नाम हर समय जुबान पर रखो। अल्लाह की कृपा से मदद की आशा रखो, अल्लाह तआला तुम को सफलता प्रदान करेगा। “ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीइल अज़ीम को अपना सहायक बनाओ।”

जब दुश्मनों का सामना हो तो खामोश रहो, अगर दुश्मन नारे लगाएं, अश्लील बातें बकें और लड़ने आएं तो उनसे उस समय तक न लड़ो जब तक आदेश न पहुँचे।

“जो धन—सम्पत्ति, हाथी, घोड़े तुम्हारे हाथ आएं उनको तुम अपनी सम्पत्ति न समझो ताकि तुम अपने साथियों में नेक नाम रहो, हर एक का सम्मान करो और सबकी दिलजोई में लगे रहो। सेना को जिन वस्तुओं की आवश्यकता हो उनको पूरी करने का प्रयास करो। जब क्षेत्रों पर तुम्हारी सत्ता निश्चित हो जाए और किले सुरक्षित हो जाएं तो जो कुछ बचे उसको प्रजा की भलाई और कल्याण में खर्च करने में कंजूसी न करो। उनके खाने

पीने की पूरी व्यवस्था करो। सिपाहियों को गुनीमत का माल भी दो और ऐसी उदारता करते रहो कि सेना में अनाज सस्ता हो, किसानों और व्यापारियों के सामने हर तरह की रियायत करो क्योंकि उनकी खुशहाली और सन्तुष्टि से देश कृषि उत्पादक और आबाद रहता है और इस तरह वह तुम्हारी ओर झुके भी रहेंगे।

जो कोई तुमसे सम्बन्ध तोड़ने या दोस्ती करने का इच्छुक हो तो उसको मायूस न करो, उसके अनुरोध को स्वीकार करो, प्रजा को शरण देकर उनके दिलों को मज़बूत करो, बादशाही के चार स्तम्भ हैं।

1. मदारा (आतिथ्य), मवासात (तसल्ली), मुसामेहत (हमदर्दी), मुसाहिरत (रिश्तेदारी)।
2. सम्पत्ति और दान का लेना—देना।
3. दुश्मनों के विरोध में उचित दृष्टिकोण।
4. रोब, शौर्य, यश, कीर्ति का प्रदर्शन करना। इन बातों से दुश्मानों को पराजित करना चाहिए। राजा जिस बात का अनुरोध करें उसका अच्छी तरह समझौता करके उनको रास्ते पर लाओ। जब वह सेवा के लिए आमादगी का प्रदर्शन करें और मालगुज़ारी खज़ाने में अदा करते रहें तो

उनको हर तरह की ताक़त पहुँचाते रहो, दुश्मनों की घृणित चालों से बचते रहो....। मुसलमानों का कोई दूत कहीं भेजो तो उसका धार्मिक विश्वास मज़बूत होना चाहिए ताकि वह हर बात को मुखर ढंग से बिना झिझक कह सके.....। जो व्यक्ति एक अल्लाह के अस्तित्व की घोषणा करे और तुम्हारा आज्ञापालन स्वीकार कर ले तो उसकी सारी धन—सम्पत्ति ज़मीन और खेती को उसके पास छोड़े रखो और जो इस्लाम कबूल न करें उनको उस सीमा तक हानि पहुँचाओ कि वह आज्ञाकारी हो जाएं। जो लोग विरोध पर उतर आएं तो उनसे लड़ने के लिए तैयार रहो। ऐसी जगह जा कर लड़ो जहाँ, ज़मीन फैली हुई हो ताकि मर्द मर्द के साथ और सवार सवार के साथ मैदान में अपनी ताक़त दिखा सकें। जब लड़ाई में लग जाओ तो अल्लाह की कृपा पर भरोसा करो।

### **मुहम्मद बिन कासिम का दानशील व्यवहार:—**

हज्जाज बिन यूसुफ बहुत ताक़तवर शासक रहा है। उसके आदेशों की अवहेलना मुश्किल से हुआ करती थी। मुहम्मद बिन कासिम उसको अपना स्नेह करने वाला बुजुर्ग

समझता रहा। क्योंकि वह उसका चचेरा भाई होने के अलावा उसका दामाद भी था। हज्जाज भी उसको बहुत प्रिय रखता था। इसलिए दोनों की सोच में बड़ी एकरूपता रही। इसके अतिरिक्त मुहम्मद बिन कासिम में व्यक्तिगत रूप से असाधारण कुलीनता और अच्छा चरित्र और विनम्रता थी। इसलिए उसने न केवल हज्जाज के आदेशों पर पूरी तरह अमल किया, बल्कि युद्ध के बाद उसने अपने अधीन लोगों, समझौता करने के इच्छुक लोगों और शान्तिप्रिय लोगों से जो सद्भाव और उदारता का व्यवहार किया, वह दुनिया के इतिहास में अपनी मिसाल आप है।

सिन्ध पर आक्रमण का एक कारण यह भी बताया जाता है कि लंका के राजा ने हज्जाज बिन यूसुफ के पास सद्भाव का एक शिष्ट मण्डल भेजा। तो उस शिष्ट मण्डल के साथ आठ जहाज थे जिनमें राजा की ओर से उपहार भरे हुए थे। इन जहाजों में एक मुसलमान व्यापारी की विधवा औरत और यतीम लड़के लड़कियाँ भी थे और मुसलमान औरत और मर्द

**शेष पृष्ठ...24...पर**

# मौजूदा हालात की रोशनी में कुछ ज़रूरी बातें

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

हुकूमतें आती हैं और जाती हैं, कभी किसी को ज़ियादा वक्त मिलता है और किसी को कम, यह वह दिखाई देने वाली कामयाबी है जिसके भविष्य की कोई ज़मानत नहीं, खुद हिन्दुस्तान में इन्द्रा गाँधी के ज़माने में एक दौर ऐसा गुज़रा है कि नहीं लगता था कि इस हुकूमत का भी शीघ्रता के साथ पतन होगा। हर उत्थान का पतन है, यदि किसी शासन काल की भविष्यवाणी की जा सकती है तो अन्दर की उस ठोस मेहनत से की जा सकती है जो संरथाएं और जमाअतें करती हैं, भविष्य उस ज़मीनी और ठोस मेहनत का होता है जो निरन्तर की जाये, जिसमें कुछ समय के लिए ऊपरी सफलताओं से नज़र हटा कर वह बुन्यादी काम किये जायें जो कौमों की सफलताओं के लिए "Master Key" की हैसियत रखते हैं, वरना एलेक्शन की मेहनत, हो सकता है कुछ सीटें किसी की बढ़ा दे या घटा दे लेकिन यह समस्या का समाधान नहीं। मौजूदा हालात

में खास तौर पर मुसलमानों पर बड़ी ज़िम्मेदारी लागू होती है, उसके पास जो समाजी व नैतिक जीवन व्यवस्था है उससे दुनिया की कौमें खाली हैं, लेकिन अफ़सोस कि उनके अन्दर इस व्यवस्था को पेश करने और दुनिया को नई दिशा देने की अभिरुचि और क्षमता कम होती जा रही है जो कभी मुसलमानों की विशेषता थी।

आज सबसे बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि हम मुसलमान अपना जाएज़ा ले कर नया सफ़र शुरू करें, सफ़र में रुकावटें और कठिनाइयाँ आ सकती हैं, लेकिन मन्ज़िल जिस के सामने हो, वह कभी हिम्मत नहीं हारता, वह हमेशा नये रास्ते तलाश करता है और मन्ज़िल को पाने के लिए कर्मशील रहता है, निराशा का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं, मुसलमानों का कभी यह तरीका नहीं रहा, इसलिए "निराशा" के शब्द को शब्दकोष से निकाल देना चाहिये। सबसे पहले हमें अपने ईमानी स्तर को बलन्द

करने की ज़रूरत है, अल्लाह पर यकीन और उसके फैसलों पर, राजी रहने और यह यकीन रखने की ज़रूरत है कि जो होता है वह हकीकत में अल्लाह का फैसला है कोई शक्ति व सत्ता में आता है तो अल्लाह के हुक्म से आता है, उसमें उसकी नीतियाँ भी हैं, वह हिक्मत वाला है और ख़ूब जानता है, निःसन्देह इसमें हमारे बुरे कामों का भी दखल है जिसे भुगतना पड़ता है, हम अपने ईमान को मज़बूत करें, ईमानी तक़ाज़ों को बलन्द करें, और इस्लाम की पूर्ण जीवन व्यवस्था को अपनी ज़िन्दगी की कार्य प्रणाली बनायें। दूसरे हमें शिक्षा के मैदान में आना होगा और उसका प्रबन्ध अपने हाथों में लेना होगा, ज़िन्दगी के तक़ाज़ों को समझ कर ज़िन्दगी के हर विभाग के लिए अपने आपको तैयार करना होगा और इल्म को अख़्लाक से जोड़ कर, इनसानियत के लिए एक नया रास्ता हमवार करना होगा, जिसकी सारी दुनिया को ज़रूरत है इसके लिए जगह जगह इस्लामिक स्कूल और

कॉलेज़ कायम करने पड़ेंगे जहाँ हमारी 95 प्रतिशत जन्सख्ता शिक्षा प्राप्त करती है, यदि उन संस्थाओं के लिए हमने फ़िक्र न की तो यह नई जनरेशन हमारे हाथों से निकल जायेगी, आगे की शिक्षा के लिए बड़े पैमाने पर कोचिंग सेन्टर की भी ज़रूरत है, जहाँ हमारी नई जनरेशन सही इस्लामी फ़िक्र के साथ मैदाने अमल में आ सके।

तीसरी बात यह है कि हमें महल्ला महल्ला, एक एक मस्जिद को सेंटर बना कर अपनी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने की आवश्यकता है उस मस्जिद के सम्पर्क में कोई घर ऐसा न बचे जिसकी हमें फ़िक्र न हो, हर हर घर का एक एक बच्चा और बच्ची ज़रूरी दीनी शिक्षा प्राप्त करे, जिससे उसका ईमान सुरक्षित रह सके, इसके अलावा एक एक घर की बुन्यादी परेशानियों का हमें इल्म हो और उनको दूर करने का भी प्रबन्ध किया जाये ग़रीबों के रोज़गार की भी फ़िक्र की जाए, और उसके लिए उपाय किये जाएं, मिल्लत के चिन्तित और हैसियत वाले इसको दीनी मिजाज के साथ अपना मैदाने अमल बनाएं और उसके लिए आवश्यक साधन अपनाएं।

चौथी बात यह है कि हम अपने अखलाक व इन्सानियत के साथ दुनिया के सामने आएं और उन भ्रान्तियों को अपनी कार्य शैली से दूर करें जो इस समय वतनी भाईयों में पैदा की जा रही हैं, हम पूर्ण इस्लाम को अपनी ज़िन्दगी में दाखिल करें और अपने अखलाक से दिल जीतने की कोशिश करें तो अवश्य यह काम आसान हो जाएगा और इसके साथ वह प्यामे इन्सानियत का लिट्रेचर आम करने की कोशिश की जाए जिससे ज़ेहन बनाने में मदद मिले। मुलाकातें करें, कार्नर मीटिंगें और डॉइलाग भी इस सिलसिले में लाभदायक हैं।

मदरसों को मज़बूत करना हमारी बुन्यादी ज़िम्मेदारी है कि यही दीन के किले हैं, यहीं से हमको अपने कामों के लिए ताक़त और उपाय प्राप्त होंगे।

यह थोड़े से ज़रूरी और ठोस काम हैं जो इन्शाअल्लाह हमारे सफल भविष्य की ज़मानत हैं, ज़रूरत इस बात की है कि हम पूरी ताक़त और उपाय के साथ इन कामों में लग जाएं, अल्लाह की मदद शामिले हाल होगी और इन्शाअल्लाह कल हालात कुछ और होंगे।



## कुर्�आन की शिक्षा.....

5. मुनाफ़िक झूठे बहाने करके जब मदीने में ठहरने की अनुमति मांगते तो उनके छल कपट को उपेक्षित करते, उनके बारे में कहा जा रहा है कि अगर आप अनुमति न देते तो अधिक उचित होता इसलिए कि इसके बावजूद भी वे निकलने वाले न थे उस समय उनकी वास्तविकता खुल कर सामने आ जाती।

6. ईमान वालों के दिल तो शहीद होने के शौक से भरे हुए हैं।

7. वे तो संदेह में पड़े हुए हैं और उनका निकलने का इरादा ही नहीं वरना कुछ तो व्यवस्था करते और तुरंत ही बहाना करने न लगते, उनसे मानो कह दिया गया कि अपाहिज़ों की तरह घरों में बैठे रहो और उनके दिल की बुराई की वजह से अल्लाह को ऐसे शुभ कार्य में उनका सम्मिलित होना पसंद ही न आया, आगे कहा जा रहा है कि अगर वे निकलते भी तो मुसीबत बनते फितने डालते, फूट डालते, और भी सावधान किया जा रहा है कि उनके जासूस अब भी तुम्हें मौजूद हैं उनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।



# नैतिक प्रशिक्षण का शुद्ध मार्श “रमज़ान”

(डॉ हारून रशीद सिद्दीकी)

पवित्र कुर्अन में आया है  
अनुवाद—

‘ऐ ईमान वालो रोजे तुम पर फर्ज (अनिवार्य) किये गये, जैसे तुम से पहलों पर फर्ज किये गये थे ताकि तुम मुत्की (संयमी) बन जाओ।

(सूरतुल्बकः:183)  
रमज़ान वह महीना है जिसमें लोगों के पथ प्रदर्शन हेतु कुर्अन उतारा गया और पथ प्रदर्शन और सत्य तथा असत्य के अंतर के प्रमाणों के साथ, अतः तुममें जो कोई इस महीने को पाए उसके लिए अनिवार्य है कि उसके रोजे रखे, और जो रोगी हों (रोजे न रख पाते हों) या सफर में हों (यात्रा पर हों) और रोज़ा रखना कठिन हो वह दूसरे दिनों में (छूटे रोजे रख कर) गिनती पूरी कर लें, अल्लाह तआला तुम्हारे लिए सरलता चाहता है संकीर्णता नहीं चाहता (इसलिए यह आदेश दिया) और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस बात पर कि तुमको अल्लाह ने सत्य मार्ग प्रदान किया और ताकि तुम कृतज्ञ बन जाओ।

(अलबकः:185)

ऊपर की आयत में बताया गया है कि रोजे तुम पर फर्ज किये गये, नीचे वाली आयत में बताया गया, रमज़ान के रोजे फर्ज किये गये, पहली आयत में सूचना दी गई कि इसी प्रकार तुमसे पहले लोगों पर भी रोजे फर्ज किये गये थे परन्तु यह नहीं बताया गया कि उन पर किस मास में और कितने दिनों के रोजे फर्ज किये गये थे। हम अपने देश में अपने वतनी भाइयों (हिन्दू जनों) को जब तब उपवास रखते हुए पाते हैं इससे इस बात की पुष्टि होती है कि इन के यहां भी रोज़ा था यह अलग बात है कि रोजों के काल तथा रोजे की विधि में कुछ बढ़ा घटा लिया गया है, जो भी हो अब तो इस्लाम आ जाने के पश्चात केवल रमज़ान के रोजे फर्ज है, तथा इस्लाम में रोजे रखने की जो विधि बताई गई है वही पसंदीदा है और उसी से अभीष्ट लाभ प्राप्त होगा। बताया गया कि रमजान में रोजे रखना अनिवार्य है। आगे बताया गया ताकि तुम मुत्की (संयमी) बन जाओ, संयमी बनना उसका फल है

पुरस्कार है, उसके स्वीकार हो जाने की पहचान है परन्तु यह कहना और मानना पथ भ्रष्टा होगी कि उद्देश्य रोजे का संयमी बनना है यदि कोई संयमी का गुण प्राप्त करले तो उसके लिए रोजों की आवश्यकता नहीं, रमज़ान के रोजे अनिवार्य है और संयमी होना उसका पुरस्कार है रोजे के स्वीकृत प्राप्ति की पहचान भी हैं। यह ज्ञात रहे कि संयम नैतिकता का उच्चतर स्थान है, संयम पर वार्ता करने से पहले हम दूसरी आयत पर कुछ चिन्तन करें।

रमजान का मास वह मास है कि इसमें पवित्र कुर्अन उतारा गया, हदीसों से सिद्ध है कि रमज़ान की एक रात (लैलतुल कद्र) में पवित्र कुर्अन लौहे महफूज़ (अल्लाह की विशेष सुरक्षित पुस्तक) से इस दुन्या के आकाश पर उतारा गया जैसा कि सूरतुल कद्र में उल्लेख है, “हमने इस (कुर्अन) को कद्र की रात में उतारा” फिर वहीं से आवश्यकतानुसार 23 वर्षों में हज़रत जिब्रील द्वारा प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा

गया, इस कुर्अन में लोगों के लिए मार्ग दर्शन है, तथा मार्गदर्शन और सत्य असत्य में अंतर के प्रमाण हैं, इस विषय के उल्लेख के लिए सैकड़ों पृष्ठ चाहिएं अतः इसे इतने ही बयान पर छोड़ते हैं, आगे आदेश है कि जो इस मास को पाये इसमें रोज़े रखे यह आदेश अनिवार्य है, तात्पर्य है वह मुसलमान जो व्यस्क हो तथा बुद्धि रखता हो पागल आदि न हो, उस पर रमज़ान के रोज़े रखना अनिवार्य है, फिर बताया गया जो बीमार हो और उसका रोग ऐसा हो कि रोज़े रखना कठिन हो तो रोज़े छोड़ सकता है, इसी प्रकार जो सफर पर हो सफर से तात्पर्य है कम से कम 78 किमी<sup>0</sup> की दूरी के सफर पर हो, रोज़े रखने में कठिनाई हो उसको भी अनुमति है कि वह उन दिनों में रोज़े न रखे परन्तु रोगी हो या यात्री कठिनाई के कारण जितने रोज़े न रख सका हो दूसरे दिनों में वह छूटे हुए रोज़े पूरे कर ले अन्यथा उस का दण्ड अगले जीवन में पायेगा, परन्तु याद रहे कि जो रोगी रोज़े रखे या जो यात्री रोज़े रखे तो मना नहीं है अपितु यह अच्छी बात है। अल्लाह तआला ईमान वालों के लिए सरलता चाहता है कठिनाई नहीं चाहता इस लिए

यह आदेश दिया कि छूटे रोज़े पूरे करके रोज़े छोड़ने के दण्ड से बच सकें, और बताया कि ऐ मुसलमानों यह बस इसलिए है कि तुम अपने सत्य मार्ग पा लेने पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो और परिणामस्वरूप कृतज्ञ बन जाओ। बताया गया कि रमज़ान के रोज़े तुम पर अनिवार्य किये गये ताकि तुम मुत्तकी (संयमी) बन जाओ, मुत्तकी (संयमी) उसे कहते हैं जिसमें तक्वा का गुण पैदा हो जाए,) निःसंदेह संयम का अर्थ शब्दकोश में इन्द्रियों पर नियंतरण पाने के मिलेंगे परन्तु तक्वे का पूरा अर्थ उससे स्पष्ट नहीं होता, एक सहाबी ने हज़रत उमर रज़ि<sup>0</sup> से पूछने पर यूँ समझाया कि या अमीरल मौमिनीन क्या आप किसी कांटेदार मार्ग से नहीं गुज़रे हैं? उत्तर मिला ज़रूर गुज़रे हैं, सहाबी ने पूछा फिर कैसे गुज़रे हैं, उत्तर दिया कपड़े समेट कर गुज़र गये, सहाबी ने कहा बस यही तक्वा है।"

इस वार्तालाप से यह ज्ञात हुआ कि इस संसार में अल्लाह से डरते हुए गुनाहों से बचते हुए जीवन बिताना ही तक्वा है, मनुष्य हर दशा में हर समय में, हर स्थान पर हर काम में अल्लाह को ध्यान में रखे कि अल्लाह हमारे इस कार्य को

देख रहा है, यदि काम अल्लाह को नाखुश करने वाला है तो तुरन्त उसे छोड़ देना चाहिए और यदि अल्लाह को प्रसन्न करने वाला है तो अवश्य करना चाहिए इस प्रकार जीवन बिताने वाला मुत्तकी (संयमी) कहलाएगा, और यही उच्चतर नैतिकता है। रमज़ान के रोज़ों से इस गुण का भरपूर प्रशिक्षण होता है।

रोज़ेदार हर रात नीयत करता है कि अल्लाह ने रोज़े फर्ज़ किये हैं मैं सुब्ह को रोज़ा रखूंगा, इसकी तैयारी में पिछली रात उठ कर सेहरी खाता है अल्लाह को याद करता है यह अमल पूरे महीने चलता है जिससे अल्लाह के आदेश स्वीकार करने की आदत बनती है, सुब्ह को फज्र की नमाज़ अदा करता है और दिन भर खाने पीने तथा वैध सम्भोग को भी इसलिए त्यागता है कि रोज़े की दशा में यह सब वर्जित हैं, यह अभ्यास भी पूरे महीने चलता है।

अपने घर वालों, अथवा अपने अंतर्गत कार्य करने वालों, नौकरों, मजदूरों आदि से नर्मी का बरताव करता है, और इसे उपकार समझता है अल्लाह की प्रसन्नता का साधन मानता है, तमाम दुष्कर्मों से बचता है

किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं करता कोई उससे झगड़ता है तो कह देता है कि मैं रोज़े से हूं। इस अभ्यास से उसका नैतिक स्तर ऊँचा होता है।

अपनी शक्ति के अनुसार हाजत मंदों गरीबों माजूरों की मदद करता है, जिन भाईयों को शैतान ने बहका रखा है उनसे नर्मी तथा हिकमत (भले उपाय) से बात करके उनको अल्लाह तआला का दास बनाने का प्रयास करता है। इन सारे कामों से उसके आचरण अल्लाह को प्रसन्न करने वाले हो जाते हैं।

दिन भर रोज़ा रखता है दान पुण्य करता है इफ्तारी में सामर्थ्य के अनुसार दूसरे रोजे दारों को भी इफ्तार कराता है, दिन में प्रतिदिन कुछ कुर्अन का पाठ करता है, सुब्हानल्लाहि वलहम्दुलिल्लाहि आदि जिन्न की तस्बीह भी पढ़ लेता है प्यारे नबी पर दुर्द व सलाम पढ़ता है, इशा की नमाज़ के पश्चात तरावीह की नमाज़ पढ़ता है, यह सारे कार्य पूरे महीने दोहराता है, क्या नैतिक प्रशिक्षण का यह उत्तम अवसर नहीं है? निःसंदेह रमज़ान नैतिक प्रशिक्षण का शुभ मास है। अल्लाह तआला हम सबको इससे लाभांवित करे।



## भारत के अतीत .....

भी हज के इरादे से उन पर सवार हो गए थे। यह जहाज़ फाजरून के शहर में पहुँचे तो हवा विरोधी होने के कारण दीबल की ओर भटक गए। यहाँ के समुद्री डाकुओं ने उन जहाजों का सारा माल लूट लिया और यात्रियों को गिरफ्तार कर लिया। इन कैदियों में अज़ीज़ नामक क़बीले की एक औरत अचानक पुकार उठी ऐ हज्जाज मुझे बचाओ। हज्जाज को जब इसकी खबर हुई तो वह बेचैन हो गये और उसने सिन्ध को अधीन करने का पक्का इरादा किया। पहले दो सैनिक अभियानों को तो असफलता मिली लेकिन मुहम्मद बिन क़ासिम हर तरह सफल रहा। वह अरदीबल पर विजय प्राप्त करके दीबल की ओर बढ़ा और जब उसको परास्त करने में लगा हुआ था तो एक ब्राह्मण उसके पास आया और याचना की कि हमारी नक्षत्र विद्या की किताब में लिखा हुआ है कि इस्लामी सेना को विजय प्राप्त होगी। फिर एक ज्योतिषी ने आकर आँखों देखी गवाही दी और उसने यह भी कहा कि अगर मेरे बाल-बच्चों के जान-माल को शरण दी

जाए तो वह उन मुसलमान कैदियों का पता बता सकता है जो लंका के जहाजों पर से गिरफ्तार कर लिए गए हैं। मुहम्मद बिन क़ासिम ने उसको शरण दी और उसी की सहायता से वह कैदी मुहम्मद बिन क़ासिम के पास लाए गए। ये कैदी एक ऐसे व्यक्ति की कैद में थे जो बुद्धिमान, समझदार परहेजगार और साहित्यकार भी था। मुहम्मद बिन क़ासिम ने उसको दण्ड देना चाहा। लेकिन उसने अनुरोध किया कि कैदी स्वयं बताएंगे कि उसने उनके साथ क्या व्यवहार किया। कैदियों ने सर्वसम्मति से कहा कि उसने हमारा आतिथ्य—सत्कार किया जिसके लिए हम उसके आभारी हैं और वह हमेशा इस्लामी सेना की शुभ सूचना से हमारे दिलों को तसल्ली देता रहा। यह सुन कर मुहम्मद बिन क़ासिम ने उसे क्षमा कर दिया जिसके बाद उसने इस्लाम क़बूल कर लिया। मुहम्मद बिन क़ासिम ने खुश हो कर दीबल में उसको अपना अधीनस्थ नियुक्त किया और यह पूरा क्षेत्र उसके नेतृत्य में दे दिया।

.....जारी.....



# रमज़ानः नेकियों का सीज़न

जमाल अहमद नदवी  
(उप सम्पादक)

खुशी व उल्लास का वह मौसम होता है और लोगों को लगता कि आप रमजान के महीना जिसे नेकियों और अपने अपने कारोबार और रोज़ों से मिला देंगे। इबादतों का वैश्विक मौसम कहा जाता है और जो हर जगह और हर एक के लिए एक साथ अपनी रहमतें व बरकतें न्योछावर करता है जिससे तमाम मुसलमान पढ़े लिखे और अनपढ़, अमीर व गरीब, छोटे बड़े, मर्द और औरत सब एक समान फायदा उठाते हैं उस मुबारक महीने में एक मुबारक रात आती है जिसे हज़ार महीनों से बेहतर कहा गया है, वह कुर्झान वाला महीना कहा जाता है उस पूरे महीने के रोज़े फर्ज हैं, वह सब्र, हमदर्दी, ईसार व कुर्बानी, मगफिरत और जहन्नम से छुटकारे का महीना कहलाता है, जानते हैं उस महीने का क्या नाम है? उस रहमत व बरकत वाले अज़ीम महीने का नाम रमजानुल मुबारक है और इसके एक एक पल में अल्लाह तआला की रहमतें भारी वर्षा की तरह बरसती हैं इसका इन्तेज़ार विश्व स्तर पर हर मुसलमान को साल भर रहता है। जिस तरह हर काम का एक सीज़न और सम्बन्धित कामों के सीज़न का साल भर इन्तेज़ार रहता है अगर सीज़न कामयाब तो मानो साल कामयाब, सीज़न खराब तो गोया साल खराब, इसलिए हर व्यक्ति अपने अपने एतिबार से सीज़न की तैयारी करता है ईमान वालों को भी एक सीज़न का बड़ी बेसब्री से इन्तेज़ार रहता है जिसमें वह अपनी तिजोरियों को नेकियों से भर कर आखिरत की अस्ल ज़िन्दगी को संवारना चाहते हैं, नेकियों के इस मौसमे बहार का इन्तेज़ार तो हुजूर सल्लू दो माह पहले यानी रजब का चाँद देखने के बाद ही करने लगते थे और दुआ फरमाते थे, ऐ अल्लाह! हमारे लिए रजब और शाबान के महीनों में बरकत अता फरमाइये और हमें रमजान के महीने तक पहुँचा दीजिए। आप सल्लू रजब से ही रमजान की तैयारी शुरू फरमा देते, और शाबान में तो बहुत ज़ियादा रोज़े रखते, हज़रत आयशा रज़िया फरमाती हैं कि मुझे ख्याल होने

मालूम हुआ कि रमजान की बरकतें रजब से शुरू हो जाती हैं और शाबान में तेज़ हो जाती हैं और रमजान उनका मौसमे बहार होता है, आप सल्लू खुद एहतिमाम करते और सहाबा रज़िया को शाबान के आखरी दिनों में रमजान की वास्तविकता से आगाह करते और नेक कामों पर उभारते और अल्लाह का यह इरशाद सुनाते कि— “ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फर्ज किये गये हैं जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फर्ज किये गये थे, ताकि तुम्हारे अन्दर तक्वा और परहेजगारी पैदा हो।”

(सूरः बकरा—183)

तक्वे की व्याख्या अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रही फरमाते हुए लिखते हैं कि, तक्वा दिल की उस कैफियत का नाम है जिसके हासिल होने के बाद दिल को गुनाहों से झिझक मालूम होने लगती है और नेक बातों की तरफ उसको बेताबाना तड़प होती है।

और आप सल्ल० लोगों से यह भी इरशाद फरमाते कि लोगो एक अजमत का महीना आ पहुँचा है इस मुबारक महीने की एक रात शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है इसके रोज़े फर्ज हैं और इसकी रातों में अल्लाह के सामने खड़े हो कर तरावीह पढ़ने को नफ़्ल इबादत मुकर्रर किया है, जो शख्स इस महीने में अल्लाह को राजी करने के लिए कोई सुन्नत या नफ़्ल अदा करेगा तो उसको दूसरे ज़माने के फर्जों के बराबर और जो फर्ज अदा करेगा उसका सवाब सत्तर फर्ज के बराबर मिलेगा, जो रोज़ेदार को इफ़तार करायेगा वह उसकी मग़फिरत और जहन्नम से आज़ादी का जरिया होगा और उसको रोज़ेदार के बराबर सवाब दिया जायेगा और रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी नहीं की जायेगी। दूसरी हदीस में आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया, जब रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाजे खोल दिये जाते हैं दोज़ख के दरवाजे बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान जक़ड़ दिये जाते हैं।

साल में ग्यारह महीनों के बाद रोज़े का आना, और जन्नत के दरवाज़ों का खुलना,

जहन्नम के दरवाज़ों का बन्द होना, शैतान जो इन्सानों का खुला दुश्मन है जो हर समय अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से दूर करके गुनाहों में धकेलने में लगा रहता है, बेड़ियों में जक़ड़ दिया जाना, यह अल्लाह की रहमतों को दरशाता है कि किस तहर अल्लाह अपने कमज़ोर बन्दों को माँफ कर के जन्नत में दाखिल करना चाहता है। एक दूसरी जगह आप सल्ल० इरशाद फरमाते हैं कि अल्लाह की ओर से एक फरिश्ता बराबर आवाज़ लगाता रहता है कि ऐ नेकी और खैर के चाहने वाले क़दम आगे बढ़ा और ऐ बुराई के चाहने वाले बुरे कामों से रुक जा और अल्लाह बहुत से गुनहगार बन्दों की मग़फिरत फरमाता है, और यह सब रमज़ान की हर रात में होता है।

रमज़ान की इन्हीं विशेषताओं की वजह से रमज़ान का चाँद होते ही माहौल में एक रौनक पैदा हो जाती है क्या शहर क्या गाँव कोई गली कूचा उससे वंचित नहीं रहता, पूरे विश्व में एक बहार आ जाती है हर ईमान वाला नेक कामों में लग जाता है और तहज्जुद सेहरी, इफ़तारी, तरावीह, जिक्र, तस्बीह हर चीज़ की पाबन्दी के

साथ अपने को गुनाहों से बचाने की भी पूरी कोशिश करता है, क्योंकि हदीस शरीफ में आया है कि रोज़ा सिर्फ खाने पीने और बीवी से दूर रहने का नाम नहीं बल्कि झूठ, ग़ीबत और हाथ पैर की दूसरी बुराईयों के छोड़ने से ही रोजे में नूरानियत पैदा होती है और सही मानो में इन्सान इस माहौल से उसी समय फायदा उठा सकता है जब इन विशेषताओं से फायदा उठाने के लिए उसका दिल दिमाग़ पूरी तरह तैयार हो।

मस्जिदों से लेकर घरों तक तिलावत, जिक्र, तरावीह तस्बीह व नमाज़ का एक समाँ बन्ध जाता है और लोगों के अन्दर अपने अजीज़ों और दूसरे ज़रूरतमंदों के साथ हमदर्दी का जज्बा बढ़ जाता है, क्योंकि रोजे को अल्लाह ने अपना महीना कहा है अल्लाह का इरशाद है कि रोजा मेरे लिए है और मैं ही इसका बदला दूँगा। एक दूसरी रिवायत में है कि मैं ही उसका बदला हूँ। या मैं स्वयं बदला दूँगा बीच में किसी फरिश्ते का भी कोई वास्ता न होगा।

अल्लाह ने जहाँ रोजे की यह फजीलतें बयान की हैं वहीं रोज़ा छोड़ने वालों को भी आगाह किया है कि जानबूझ

कर रोज़े से गफलत तुम्हारे लिए बिल्कुल मुनासिब नहीं, इसलिए सुर्स्त और काहिल लोग भी जिनके अन्दर ज़रा भी शर्म व हया होती है वह रोज़ा छोड़ने से डरते और बचते हैं और अगर मजबूरन छोड़ना पड़ता है तो रोज़ेदारों और आम जनमानस के डर से चुपके से खाते पीते हैं। इस्लाम ने तो खुद हर वर्ग का ख्याल किया है सूरः बकरा: 183 में जहां रोज़ों के फर्ज होने का जिक्र है उसी के आगे आयत 184, 185 में ज़िक्र है कि कौन से लोग किन किन हालतों में रोजा छोड़ सकते हैं और फिदये की रक़म अदा कर के अल्लाह से अपनी बख्शिश का सामान कर सकते हैं।

लेकिन अफसोस कि कुछ दुस्साहसी बेशर्म व बे हया लोग अल्लाह के इन इनआमात और दण्डात्मक सज़ाओं के सुनने के बाद भी गफलत का शिकार रहते हैं और अल्लाह व रसूल को खुश रखने की कोशिश नहीं करते और वह रोज़े को एक बेकार का अमल समझते हैं और खुले आम खाते पीते नज़र आते हैं और बड़ी ढिठाई से कहते हैं कि जब ऊपर वाले का डर नहीं तो बन्दों से क्या डरना, और कुछ नौजवान छोटी छोटी बीमारियों का सहारा ले कर

धड़ल्ले से रोज़ा छोड़ देते हैं जब कि एक हदीस में आप सल्ल0 ने फरमाया जो शख्स रमजान का एक रोज़ा भी बिना किसी शरई मजबूरी के छोड़ दे तो फिर पूरी उम्र का रोज़ा भी उसकी भरपाई नहीं कर पायेगा। एक दूसरी हदीस में है कि उससे बड़ा महरूम कौन होगा जो रमजान का महीना पाये और अपनी बख्शिश न करा ले।

अब अगर हम नेकियों के इस सीज़न से भली भाँति फ़ायदा उठा कर अपने आपको कामयाब देखना चाहते हैं तो हमें हुजूर सल्ल0 के सबसे करीब तरीन अनुयाइयों यानी सहा—ब—एकिराम से लेकर ताबिईन और अभी तक के समस्त बुजर्गोंने दीन, औलिया—ए—किराम और अपने पूर्वजों की ज़िन्दगियों का अध्ययन करना होगा कि वह रमजान के इस सीज़न से कैसे फ़ायदा उठाते थे? क्या रमज़ान उनके दिनचर्या में कुछ फर्क लाता था या नहीं? क्या यह हज़रात भी हम लोगों की तरह इधर—उधर बैठ कर बातचीत और दोस्त अहबाब से मिलने जुलने और बेकार व बेफायदा कामों में लगकर और सो कर अपना रोज़ा काट लेते थे? हरगिज़ ऐसा नहीं, जब हम सहाब—ए—किराम से लेकर

आज तक के बुजुर्गने दीन की ज़िन्दगियों का दिल दिमाग की गहराई से अध्ययन करते हैं तो साफ मालूम होता है कि वास्तव में वही अल्लाह व रसूल के एक एक फरमान पर पूरे विश्वास के साथ अमल करने वाले थे वह नेकियों के सीज़न का एक एक लम्हा वसूल करना जानते थे, वह हुजूर सल्ल0 से सच्ची अकीदत रखते थे, वह अपने हर अमल को आप सल्ल0 के अमल से मिला देना चाहते थे, वह रमजान के रोज़ों की पूरी पाबनदी उसके आदाब और शर्तों के साथ करते थे वह जानते थे कि रोज़ा सिर्फ सुब्ह से शाम तक खाने पीने और कामवासना से रुकने का नाम नहीं बल्कि वह जानते थे कि रोजा नाम है इस बात का कि इन्सान के बदन के किसी भी अंग नाक, कान, औँख, हाथ पैर जुबान, दिल दिमाग से गुनाह न हो यानी रोज़े की हालत में यह गुनाह में ग्रस्त न हों क्योंकि हदीस में है कि रोज़ा आदमी के लिए ढाल है जब तक वह उसे फाड़ न दे, ढाल से मुराद है कि रोज़ा इन्सानों की शैतान से इस माह में खास तौर से हिफाज़त करता है इसलिए कि वह खुद कैद रहता है आप सल्ल0 से किसी ने पूछा कि रोजा किस

चीज़ से फट जाता है, आप सल्ल0 ने फरमाया झूठ और गीबत से! इसी तरह अल्लाह के यह नेक बन्दे दिन रात तिलावत का खूब एहतिमाम करते हैं चूंकि इस महीने को कुर्�আন से खास निसबत है, अल्लाह फरमाता है रमजान वह महीना है जिसमें कुर्�আন नाजिल किया गया, इसी लिए इसको कुर्�আন का महीना कहा जाता है। आप सल्ल0 खुद भी हज़रत जिब्रील के साथ इस महीने में कुर्�আন का दौर किया करते थे उसी समय से तहज्जुद से लेकर तरावीह तक में कुर्�আন पढ़ने और सुनने सुनाने का दौर चला आ रहा है। हमारे बुजुर्गों में तो कई ऐसे गुज़रे हैं कि वह कुर्�আন की तिलावत के लिए अपने आप को सबसे बिल्कुल अलग कर लेते थे और एक दिन में दो से तीन कुर्�আন खत्म किया करते थे और अपने आराम व राहत को बिल्कुल त्याग देते थे, तहज्जुद, और दूसरी नमाज़ों का तकबीर ऊला के साथ एहतिमाम किया करते थे, चूंकि अल्लाह को मांगना बहुत पंसद है इसलिए यह हज़रात अपने गुनाहों की माफी के साथ जन्नत के तलबगार होते और रो कर गिड़गिड़ा कर अल्लाह का फज्ल माँगते, चूंकि हदीसों में इफ्तार और तहज्जुद के समय

दुआओं के कुबूल होने का जिक्र खूब मिलता है सेहरी और इफ्तार के समय दुआओं का खास एहतिमाम करते और खैर व नेकी के छोटे बड़े जितने काम कर सकते थे ज़रुर करते थे, अल्लाह रमजान में हर घड़ी देने के लिए तैयार रहता है और फरिश्तों से ऐलान कराता है कि खैर के चाहने वालों आगे बढ़ो तो अल्लाह के नेक बन्दे बढ़ बढ़ कर लेने को हर घड़ी तैयार रहते थे, किसी ने कहा है “जो बढ़ कर खुद उठा ले हाथ में मीना उसी का है”।

अल्लाह की रहमतें तो पूरे रमजान में उत्तरती हैं लेकिन आखिर के दस दिनों में तो रिमझिम बारिश की तरह बरसती हैं हज़रत आयशा रज़ि0 फरमाती हैं कि जब रमजान का आखरी अशरा आता तो आप सल्ल0 सारी सारी रात इबादत करते और जागते रहते और अपने घर वालों को भी जगाते और खूब इबादत करते और कमर कस लेते यानी अपनी बीवियों से भी अलग हो जाते और इबादत में लगे रहते, इन्हीं दिनों में वह मुबारक रात भी आती है जिसे शबे क़द्र कहा जाता है और जिसे अल्लाह ने हज़ार महीनों से अफज़ल बताया है। इस रात में फरिश्ते रात भर ऐसे लोगों

को ढूँढ़ ढूँढ़ कर माफी का परवाना देते हैं।

ज़रुरत इस बात की है कि हम भी अपने आपको नेकियों के इस सीज़न से फायदा उठाने के लिए तैयार करें और अपने आपसे अहद करें कि हम रमजान के रोज़ों की पाबन्दी करेंगे और तिलावत ज़िक्र, तस्बीह, दुआ और दूसरे ख़ैर के कामों में लगायेंगे और अपने घर में माहौल बनाने की पूरी कोशिश करेंगे, और दीनी प्रोग्रामों के नाम पर अपने को मोबाईल से चिपका कर नहीं रखेंगे, गीबत झूठ, और हर किस्म की बुराईयों से दूर रह कर अपने रोज़ों के ज़रिए अल्लाह व रसूल को राज़ी व खुश करने की पूरी कोशिश करेंगे और एक माह की इस ईमानी कमाई से साल भर ऊर्जा हासिल करेंगे, अल्लाह हम सबको तक्वे वाली नेमत अता फरमाये और हम कमज़ोरों के थोड़े अमल को कबूल करके अपने शायाने शान बदला अता फरमाये। आमीन।



सभी पाठकों को रमज़ान  
व ईद की दिली मुबारकबाद!  
इदारा

# आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ्ती मुहम्मद ज़ाफर आलम नदवी

**प्रश्न:** क्यों रोज़े की हालत में कोरोना वैक्सीन लगाई जा सकती है? क्या इस से रोज़ा टूट तो नहीं जायेगा?

**उत्तर:** रोज़े की हालत में इंजेक्शन चाहे रगों में लगाया जाय या गोश्त में, इससे रोज़ा नहीं टूटता है, क्योंकि वैक्सीन भी एक तरह का इंजेक्शन है इसलिए रोज़े की हालत में वैक्सीन लगवाने में कोई हरज नहीं। (रद्दुल मुहतार 395 / 2)

**प्रश्न:** क्या रोज़े की हालत में इंहेलर इस्तेमाल कर सकते हैं? उससे रोज़े पर कोई असर तो नहीं पड़ेगा?

**उत्तर:** इंहेलर के इस्तेमाल से रोज़ा टूट जाता है, क्योंकि इंहेलर से ऑक्सीजन जर्रात की शक्ति में गले में पहुँचती है और वहाँ से घुल कर जिसमें दाखिल होती है, और गले के अन्दर किसी चीज़ के दाखिल होने से रोज़ा टूट जाता है, लेकिन ऐसी सूरत में रोजेदार पर सिर्फ़ क़ज़ा लाजिम होगी कफ़्फारा नहीं।

(रद्दुल मुहतार 395 / 2)

**प्रश्न:** क्या मेडिकल टेस्ट के लिए खून निकलवाने से रोज़ा टूट जाता है?

**उत्तर:** रोज़ा ऐसी चीज़ों से टूटता है जो जिसमें दाखिल हों, ऐसी चीज़ों से नहीं टूटता जो जिसमें बाहर निकलें, इसलिए खून निकलवाने से रोज़ा नहीं टूटता।

**प्रश्न:** रोज़ा किसे कहते हैं?

**उत्तर:** सुब्हे सादिक से गुरुबे आफ़ताब तक नीयत के साथ खाने पीने और नफ़सानी खाहिश (काम इच्छा) पूरी करने को छोड़ देने का नाम रोज़ा है।

रोज़े को अरबी में सौम कहते हैं उसका बहुबचन सियाम है, रोज़ा खोलने को इफ़तार कहते हैं और जिस खाने की चीज़ से रोज़ा खोलते हैं उस को इफ़तारी कहते हैं।

**प्रश्न:** रमज़ान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

**उत्तर:** हर आकिल बालिग मुसलमान मर्द, औरत पर रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हैं इन रोज़ों को शर्ई उज्ज़ के बगैर छोड़ने वाला फासिक है।

**प्रश्न:** रमज़ान के रोज़ों की नीयत का क्या हुक्म है?

**उत्तर:** रमज़ान के रोज़ों की नीयत फर्ज़ है बगैर नीयत के रोज़ा नहीं होगा अगर किसी ने रमज़ान में सुब्हे सादिक से गुरुब आफ़ताब तक कुछ खाया पिया नहीं लेकिन रोज़े की नीयत नहीं की थी तो उसका रोज़ा न होगा।

**प्रश्न:** रमज़ान के रोज़े की नीयत कब करना चाहिए?

**उत्तर:** रमज़ान के हर रोज़े की नीयत रात ही में कर लेना चाहिए अगर रात में नीयत नहीं कर सका तो दिन में ज़वाल से पहले तक नीयत कर ले तो नीयत हो जाएगी। मगर ज़वाल के बाद नीयत की तो नीयत सही नहीं होगी।

**प्रश्न:** रमज़ान के रोजे की नीयत किस तरह करनी चाहिए?

**उत्तर:** रमज़ान के रोज़े की नीयत दिल में इरादा करने से हो जाती है रात में दिल में इरादा करें कि मैं सुब्ह को रोज़ा रखूँगा या सुब्ह को दोपहर से पहले नीयत करे कि मैं आज

रोज़ा रखूंगा तो नीयत हो जाएगी, अगर ज़बान से कहना चाहे तो रात में कहे कि मैं सुब्ध को रोज़ा रखूंगा या सुब्ध को ज़बान से कहे कि मैं आज रोज़ा रखूंगा मगर याद रहे ज़बान से कहना जरूरी नहीं दिल में इरादा जरूरी है, अगर कोई शब्द रोज़ा रखने के लिए सेहरी खाए तो सेहरी खाने से रोज़े की नीयत हो जाएगी।

**प्रश्ना:** अगर कोई पहली रमज़ान की रात में पूरे रमज़ान के रोज़ों की नीयत करे तो यह नीयत सही होगी या नहीं?

**उत्तर:** रमज़ान के हर रोज़े की नीयत उस की रात या सुब्ध को दोपहर से पहले तक करना जरूरी है एक साथ पूरे रमज़ान के रोज़ों की नीयत करना सही न होगी। इसी तरह एक से ज़ियादा जैसे दो तीन रोज़ों की नीयत भी एक साथ की जाए तो सही न होगी।

**प्रश्ना:** रोज़े के मुस्तहब्बात क्या क्या हैं?

**उत्तर:** (1) सेहरी खाना  
(2) रात ही से नीयत करना  
(3) सेहरी आखिरी वक्त में खाना लेकिन सुब्धे सादिक से पहले फारिग हो जाये।  
(4) इफ्तार में जल्दी करना

जब्कि आफ़ताब के गुरुब न होने का शुभा न रहे।

(5) गीबत, झूठ, गाली ग्लोज वगैरा बुरी बातों से बचना  
(6) छुहारे या खजूर से और यह न हो तो पानी से इफ्तार करना।

**प्रश्ना:** वह कौन कौन से उज्ज़ हैं जिन से रोज़ा न रखना जाइज़ हो जाता है?

**उत्तर:** (1) सफर यानी मुसाफिर को हालते सफर में रोज़ा न रखना जाइज़ है लेकिन अगर सफर में मशक्कत (कठिनाई) न हो तो रोज़ा रखना अफ़ज़ल है।

(2) मरज़ यानी ऐसी बीमारी जिस में रोज़ा रखने की ताक़त न हो या बीमारी के बढ़ जाने का अन्देशा (भय) हो।

(3) बहुत बूढ़ा होना।

(4) गर्भवती होना जब कि औरत को या उसके बच्चे को रोज़े से नुक्सान पहुंचने का गुमाने गालिब हो।

(5) दूध पिलाना, जब कि दूध पिलाने वाली को या बच्चे को रोज़े से नुक्सान पहुंचता हो।

(6) रोज़े से इस कदर भूक या प्यास का गल्बा हो कि जान निकल जाने का अन्देशा हो जाये।

(7) माहवारी और प्रसवोत्तर की हालतों में रोज़ा रखना जाइज़

नहीं।

**प्रश्ना:** अगर कोई बदबूख्त रमज़ान के कई रोज़े कस्दन तोड़ डाले तो क्या उस को हर रोज़े का कपफ़ारा अलग अलग देना होगा?

**उत्तर:** अगर किसी ने एक रमज़ान के कई रोज़े कस्दन तोड़ डाले हैं तो उस पर एक ही कपफ़ारा लाजिम आएगा अलबत्ता जितने रोज़े तोड़े हैं उनकी कज़ा भी जरूरी होगी।

**प्रश्ना:** जो बूढ़ा आदमी रोज़ा रखने की ताक़त न रखता हो उसके लिए रमज़ान के रोज़ों के बारे में क्या हुक्म है?

**उत्तर:** ऐसा बूढ़ा आदमी जो रोज़े रखने की ताकत नहीं रखता और वह इतनी इस्तिताअत रखता है कि रोज़ों का फिदया दे सके तो वह हर रोज़े के बदले में किसी ग़रीब (मिस्कीन) मुसलमान को दोनों वक्त पेट भर के खाना खिलाए या हर रोज़े के बदले में एक किलो 600 ग्राम (1600 ग्राम) गेहूं या उसकी कीमत मुस्लिम मिस्कीन को दे लेकिन ऐसा बूढ़ा जो रोज़े की ताक़त भी नहीं रखता है और फिदया देने की इस्तिताअत भी नहीं रखता है तो अल्लाह तआला उसको मुआफ़ फरमाएंगे।

**प्रश्ना:** तरावीह की नमाज़ का क्या हुक्म है?

**उत्तर:** रमज़ान में तरावीह की नमाज़ पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है, यह नमाज़ इशा के फर्ज़ और दो सुन्नतें अदा करने के बाद दो दो रकअत कर के बीस रकअतें पढ़ी जाती हैं। चाहिए कि यह नमाज़ एहतिमाम के साथ जमाअत से अदा करें इस नमाज़ में पूरा कुर्�आन मजीद खत्म करना चाहिए अगर पूरा कुर्�आन मजीद सुनाने वाला हाफिज़ न मिल सके तब भी यह नमाज़ बीस रकअत अदा की जाये। नमाज़े तरावीह के खत्म पर वित्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाये अगर किसी की जमाअत छूट गई हो तो वह तन्हा तरावीह की नमाज़ पूरी कर के सुन्नत का सवाब हासिल करे औरतों को चाहिए कि अगर उनको कोई शरई उज्ज़ न हो तो घर पर तरावीह की नमाज़ पढ़ लिया करें।

**प्रश्ना:** कान में तेल या दवा या पानी डालने से रोज़ा टूटता है या नहीं?

**उत्तर:** कान में तेल या दवा डालने से रोज़ा टूट जाता है और रोज़े की कज़ा लाजिम आती है लेकिन कान में पानी डालने से रोज़ा नहीं टूटता मगर

रोज़ेदार को चाहिए कि कान में पानी भी न डाले।

**प्रश्ना:** रोज़े का कफ़ारा कब लाजिम आता है?

**उत्तर:** रमज़ान का रोज़ा जान बूझ कर खाने पीने या औरत से मिलाप कर के तोड़ देने से क़ज़ा और कफ़ारा दोनों लाजिम आते हैं।

**प्रश्ना:** ज़क़ात कितने माल पर और किस पर फर्ज़ है?

**उत्तर:** ज़क़ात हर उस आकिल बालिग मुसलमान पर फर्ज़ है जो निसाब का मालिक हो निसाब में चांदी और सोने को मेयार बनाया गया है, जिसके पास दो सौ दिरहम अर्थात् 612 ग्राम 282 मिली ग्राम चांदी हो या इतनी चांदी खरीदने के पैसे हों उसको निसाब का मालिक (साहिबे निसाब) कहेंगे। अगर उसके पास चांदी बिल्कुल नहीं है और सिर्फ़ सोना बीस मिस्काल अर्था 87 ग्राम 470 मिली ग्राम या उससे ज़ियादा है वह भी साहिबे निसाब है।

अगर किसी के पास चांदी भी है और सोना भी मगर दोनों निसाब से कम वजन में है तो दोनों की कीमतों का अन्दाज़ा लगा कर अगर उस की मजमूई कीमत से 612 ग्राम 282 मिली ग्राम चांदी खरीदी

जा सकती है तो वह भी साहिबे निसाब है और उस पर ज़क़ात फर्ज़ है।

साहिबे निसाब के माल पर जब साल गुज़र जाए तो वह अपने माल का चालीसवां हिस्सा यानी ढाई फीसद निकाल कर गरीब मुसलमान (जो साहिब निसाब न हों) को दे।

साहिबे निसाब जब तक साहिबे निसाब रहेगा उस को हर साल इसी तरह ज़क़ात निकालना होगी उसे चाहिए कि साल में कोई एक महीना ज़क़ात के हिसाब के लिए मुकर्रर कर ले और बेहतर होगा कि रमज़ान के महीने में अपने माल की ज़क़ात का हिसाब किया करे।

याद रहे सच्चियों को ज़क़ात नहीं दी जा सकती चाहे वह मिस्कीन ही क्यों न हों उन की मदद दूसरे माल से करना चाहिए इसी तरह अपने बाप, दादा, नाना, मां, दादी नानी और अपनी औलाद को भी ज़क़ात नहीं दे सकते, गरीब चाचा, चाची, फूफा, फूफी, मामू मुमानी, खालू खाला बीवी की मां बाप अपने गरीब भाई बहन को ज़क़ात दे सकते हैं गैर मुस्लिम को भी ज़क़ात नहीं दे सकते हैं। उनकी मदद दूसरे माल से करना चाहिए। □□

—पिछले अंक से आगे.....

# घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्मली रह०

—अनुवाद: मौ० मु० जुबैर अहमद नदवी

**बहुविवाह की बुराई करने वाला दिमागः—**

यहाँ इस कड़वी सच्चाई का इजहार किये बिना नहीं रहा जाता कि बहुविवाह पर आपत्ति करने वाली सोच असल में वह है जो “बलात्कार” जैसे अश्लील और शर्मनाक अपराध को अपराध नहीं समझती और उसमें उसे कोई खास बुराई नजर नहीं आती (और ये कोई काल्पनिक बात नहीं है बल्कि सच्चाई है पश्चिमी देशों जिनकी नक्काली में “बहुविवाह” की इजाज़त पर आपत्ति की जाती है वहाँ असीमित औरतों को “रखेल” के तौर पर रखना जुर्म नहीं है इसके अलावा “कॉल गर्ल” “गर्ल फ्रेंड” और न जाने किस किस नाम से भे शर्म औरतों की फौज दर फौज मर्दों की हवस का शिकार बनने के लिए हर वक्त मौजूद रहती है इसलिए बहुविवाह की उन्हें ज़रूरत ही नहीं। (बल्कि उनके नजदीक ये एक बोझ होगा क्योंकि कि इसमें फायदे के साथ मुस्तकिल जिम्मेदारियों

और खर्चों व कर्तव्यों का एक बड़ा बोझ सर पर आ जाता है।

इसी वजह से मुसलमानों में भी और कम से कम हिंदुस्तान में इस का रिवाज न होने के बराबर है) क्योंकि उन्हें चंद बीवियां न रखने से (उनके दृष्टिकोण से) कोई नुकसान नहीं पहुँचता लेकिन दूसरी तरफ इसका अफ़सोसनाक बल्कि शर्मनाक नतीजा उनके सामने “नाजायज बच्चों” की फौज की शक्ति में आता है। जिसका हल्का सा अंदाजा संयुक्त राष्ट्र की तरफ से प्रकाशित होने वाले वार्षिक “डेमोग्राफिक” 1959 के संस्करण से होता है। इसमें बताया गया है कि “अलसोलोट्रोर्ड नेमिकन रिपब्लिक” हिन्दू रास—गोएटे माला और पनामा में नाजायज बच्चों की संख्या का अनुपात सात फीसदी है। परिणाम में तो हर चार में से तीन बच्चे पादरियों के हस्तक्षेप या सिविल मैरिज रजिस्ट्री के बिना ही पैदा हो रहे हैं। (यानी 75 प्रतिशत ना जायज बच्चे पैदा हो रहे हैं)

की तादाद सबसे ज़ियादा है। यही हाल वेस्टइंडीज का है।

इसी पत्रिका में मुस्लिम देशों का जिक्र करते हुए उनमें सबसे ज़ियादा उदारवादी देश मिस्र के आँकड़ा देते हुए बताया “वहाँ नाजायज बच्चों की पैदाई का अनुपात एक फीसदी से भी कम है।” और इस असाधारण अंतर की वजह इसी वार्षिकी में ये बताई गयी है कि— क्योंकि मुस्लिम देशों में बहुविवाह का रिवाज है। इसलिए वहाँ नाजायज पैदाई का बाजार गर्म नहीं है।

(घरेलू विधि पर टिप्पणी पृष्ठ 32-33)

ऊपर वाले आंकड़े लिखने के बाद मुफ्ती—ए—आज़म हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद शाफी साहब रह० अपने विचार इन शब्दों में लिखे हैं “अफ़सोस है कि हमारे कानून बनाने वाले हज़रत जिन लोगों के विचार से प्रभावित हो कर इस तरह के कानून बनाते हैं, उनके अनुभवों को भी सामने नहीं रखते और बुरे परिणाम से सबक नहीं लेते”。 हज़रत मुफ्ती साहब

रह० ने जिस हवाले से नाजायज औलाद के जो आंकड़े पेश किये हैं उससे ज़ियादा होश उड़ा देने वाला अनुपात देश के एक मशहूर अखबार में प्रकाशित हुआ। अखबार लिखता है:— यूरोपीय समुदाय संघियकी ब्यूरो ने ये खबर दी है:— नाजायज औलाद की पैदाईश के मामले में आइस लैंड सबसे ऊपर है जहाँ 56 प्रतिशत औलाद नाजायज होती है। इसके बाद स्वीडन और डेनमार्क का नंबर है जहाँ 50 प्रतिशत औलाद नाजायज होती है। औसतन यूरोपीय देशों में बीस फीसदी बच्चों की पैदाईश वैवाहिक बंधन में बंधने से पहले ही हो जाती है। (कौमी आवाज लखनऊ— 18 जून 1992 ई०)। कैलिफोर्निआ के एक शहर के एक हाई स्कूल की 692 में से 150 छात्राएं गर्भवती, 80 प्रतिशत गैर शादी शुदा, साल 1984 में 15 से 19 साल तक उम्र की लड़कियों के 261260 बच्चे पैदा हुए। (सियासत जदीद, कानपुर—20 जनवरी 1986)। अन्यथा सभी समझदार समझते और जानते हैं कि सिर्फ एक औरत से हर मर्द की यौनइच्छा पूरी हो जाना ज़रूरी नहीं, मगर

जिन्होंने इंसान को महज एक “जानदार” के स्तर पर रख छोड़ा है। वो इसमें कुछ हरज नहीं समझते कि कोई भी मर्द किसी भी औरत को .....सहमति से.....अपनी हवस का निशाना बना ले और बस इस हैवानी अमल की हद उन दोनों का सम्बन्ध रहे, उसके बाद उनमें से न कोई एक दूसरे के दुःख दर्द में शरीक हो, न किसी के काम आए न मुसीबत में साथ देने पर तैयार हो, बल्कि खुद इस यौनसम्बन्ध के नतीजे में उस औरत पर चाहे जो कुछ गुज़र जाए और गुनाह का बोझ जान लेवा ही क्यों न बन जाए, उस मर्द को ज़रा बराबर भी हमदर्दी नहीं होती। वो तो सिर्फ मजा लेने की हद तक ही उसके साथ था या है, किसी हक या ज़िम्मेदारी से उसे कोई लेना देना नहीं। और इस गैर इंसानी तरीके ने अब ऐसी भयानक शकल इक्षित्यार कर ली है कि लंदन जैसे “सभ्य” और “विकसित” शहर में गरीबों ही की नहीं मालदारों की लड़कियां दरबदर मारी मारी फिर रही हैं और दरवाजे पर दस्तक के इंतजार में रहती हैं और जब

किसी के साथ जाती हैं तो फिर लौट कर आने का नाम नहीं लेतीं और इस मर्ज में जवान लड़कियां इतनी लिप्त हैं कि कोई ठिकाना नहीं।  
(कौमी आवाज़ 18जनवरी 1978)

मगर प्राकृतिक धर्म “इस्लाम” में ऐसे गैर कानूनी सम्बन्ध और स्वार्थपूर्ण तअल्लुक की कहाँ गुंजाइश! कि जिसमें प्रेम के नाम पर हैवानियत कीजाए और “सम्बन्ध” की आड़ ले कर अत्याचार का प्रदर्शन हो!

इसलिए इस्लाम ने औरत से फ़ायदा उठाने के लिए ये शर्त लगा दी है कि उसके सारे कर्तव्यों का निर्वाहन किया जाए और तक़लीफ़ व राहत हर हालत में तमाम उम्र साथ देने का प्रण लिया जाए।

अगर कोई मर्द किसी औरत से संबंध बनाना चाहता है तो आदर सम्मान के पूरे भाव के साथ समान्तर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करे और उसके सारे खर्चों और अधिकार देने की पूरी ज़िम्मेदारी स्वीकार करे तब तो ये सम्बन्ध स्थापित कर सकता है इसके बिना नहीं।

.....जारी.....



# ठण्डा पानी एक बड़ी नेतृत्व

—मौलाना तकी उस्मानी

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह रहो ने एक मरतबा हज़रत थानवी रहो से फ़रमाया कि मियाँ अशरफ़ अली! जब भी पानी पियो, तो ठण्डा पिया, ताकि रोएं रोएं से अल्लाह तआला का शुक्र आदमी ठण्डा पानी पियेगा तो उसके रोएं रोएं से अल्लाह तआला का शुक्र निकले इसलिए कि जब मोमिन चीज़ों का ज़िक्र है उनमें से एक चीज़ ठण्डा पानी भी है।

अतः रिवायत में कहीं यह नहीं मिलता कि आपके लिए किसी विशेष खाने का आयोजन किया जा रहा हो, लेकिन ठन्डे पानी का इतना एहतिमाम था कि मदीने से दो मील के फ़ासले पर एक कुआँ था “बीरे गरस्” उसका पानी बहुत ठन्डा होता था, उस कुएँ का पानी ख़ास तौर पर आपके लिए लाया जाता था और आपने वसीयत भी फ़रमाई थी कि मेरे इन्तिकाल के

बाद मुझे गुस्सल भी इसी कुएँ के आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसी “बीरे गरस्” के पानी से गुस्सल दिया गया, इस कुएँ के आसार अब भी बाकी हैं मगर पानी सूख चुका है। अल्हम्दुलिल्लाह मैंने इस कुएँ की ज़ियारत की है। आप ठन्डे पानी का एहतिमाम इसलिए फरमाते थे कि जब आदमी ठन्डा पानी पियेगा तो रोएं रोएं से अल्लाह का शुक्र निकलेगा।

## तीन सांस में पानी पीना:-

उन अहादीस में हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पानी पीने का अदब बता दिया, जिसमें से एक अदब यह भी है कि तीन सांस में पानी पिया जाये, इस अर्थ में जितनी हदीसें हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान की गई है उनकी रोशनी में उलमाये किराम ने फ़रमाया कि तीन सांस में पानी आदि पीना अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) है और सुन्नत के ज़ियादा करीब

है, लेकिन दो सांस में पानी पीना जायज़ है, चार सांस में पीना भी जायज़ है अलबत्ता एक सांस में सारा पानी पी जाना खिलाफ़ ओला है, अर्थात अनुचित है। कुछ उलमा ने लिखा है कि एक सांस में पीना मेडिकल प्वाइंट से हानिकारक है, बहर हाल हानिकारक हो या न हो मगर हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इससे मना फ़रमाया है, और तमाम उलमा इससे सहमत हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सांस में पानी पीने की जो मुमानियत फ़रमाई है वह हुरमत वाली मुमानियत नहीं है अर्थात एक सांस में पानी पीना हराम नहीं है लिहाज़ा अगर कोई शर्क्स एक सांस में पानी पी लेगा तो गुनहगार न होगा।

## हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विभिन्न शान:-

वास्तविक बात यह है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैसियत उम्मत के लिए विभिन्न शान रखती है, एक हैसियत आपकी रसूल की है कि

अल्लाह तआला के आदेशों को लोगों तक पहुँचाने वाले हैं अब अगर इस हैसियत से आप किसी काम से मुमानियत फ़रमा देंगे तो वह काम हराम हो जायेगा, और उस को करना गुनाह होगा, और एक हैसियत आपकी मेहरबान रहनुमा की है, अतः मेहरबानी की वजह से उम्मत को किसी काम से मना फ़रमाते हैं कि यह काम मत करो, तो इस मुमानियत का मतलब यह होता है कि ऐसा करने में तुम्हारे लिए नुक़सान है, यह अच्छा और प्रिय काम नहीं है लेकिन वह काम हराम नहीं हो जाता, अतः अगर कोई इसकी खिलाफ़ वर्जी करे तो यह नहीं कहा जायेगा कि उसने गुनाह का काम किया, या हराम काम किया लेकिन यह कहा जायेगा कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मनशा के खिलाफ़ काम किया और आपके पसन्दीदा तरीके के खिलाफ़ काम किया, और वह शख्स जिसके दिल में सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत हो वह सिर्फ़ हराम कामों ही को नहीं छोड़ता, बल्कि जो काम महबूबे हकीकी को नापसन्द हों, उनको भी छोड़ देता है।

### पानी पियो सवाब कमाओः—

लिहाज़ा मसअले के तौर पर तो मैंने बता दिया कि एक सांस में पानी पीना हराम और गुनाह नहीं है। लेकिन एक प्रिय सत्यवादी जिसके दिल में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत हो, वह तो ऐसे कामों के करीब भी नहीं जायेगा जो आपको पसन्द नहीं है। लिहाज़ा जिस काम के बारे में आपने यह कह दिया कि यह काम पसन्दीदा नहीं है, एक मुसलमान को यथा संभव उसके करीब नहीं जाना चाहिए, और न उसको अपनाना चाहिए अगरचि कर लेना कोई गुनाह नहीं, लेकिन अच्छी बात नहीं है, इसीलिए उलमा ने फ़रमाया कि एक साँस में पीना खिलाफ़ औला (अनुचित) है, और कुछ उलमा ने फ़रमाया कि मकरुह तनज़ीही (अप्रिय) है, लिहाज़ा बिला वजह क्यों एक सांस में पीकर अनुचित काम किया जाये, पानी तो पीना ही है। इस पानी को अगर तीन सांस में इस दृष्टिकोण से पी लो कि यह दुजूर अक़दम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नते शरीफा है तो यह पानी पीना तुम्हारे लिए इबादत

बन गया और सुन्नत के अनवार व बरकात तुम्हें हासिल हो गये। और चूंकि हर सुन्नत पर अमल करने से इन्सान अल्लाह का महबूब बन जाता है, इसलिए उस वक्त आप को अल्लाह की महबूबियत हासिल हो गई, अल्लाह के महबूब बन गये, ज़रा सी तवज्जुह से इस पर इतना बड़ा अज्ञ व सवाब हासिल हो गया, अब क्यों बे परवाही में इसको छोड़ दिया जाये? अतः इसको छोड़ना नहीं चाहिए।

### मुसलमान होने की अलामतः—

देखिए हर मिल्लत व मज़हब के कुछ तरीके और आदाब होते हैं। जिसके द्वारा वह मिल्लत (सम्प्रदाय) पहचानी जाती है। यह तीन सांस में पानी पीना भी मुसलमान की पहचान और अलामत में से है, चुनांचे बचपन से बच्चे को सिखाया जाता है कि बेटा! तीन सांस में पानी पियो, आजकल तो इसका रिवाज़ ही खत्म हो गया कि अगर बच्चा कोई अमल इस्लामी आदाब के खिलाफ़ कर रहा है तो उसको टोका जाये कि बेटा! इस तरह करो, इस तरह न करो, अल्लाह के रसूल से सच्ची महब्बत करने वालों का हाल तो यह है कि अगर एक ही धूंट हो

तो भी तीन सांस में पीते हैं ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का अज्ञ हासिल हो जाये।

### मुँह से बरतन हटा कर सांस लो:-

हज़रत अबू क़तादह रज़िया फरमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बरतन के अन्दर सांस लेने से मना फरमाया यानी एक आदमी पानी पीते हुए बरतन के अन्दर ही सांस लेते वक्त बरतन न हटाये इससे आपने मना फरमाया, एक और हदीस में इसकी तफ़सील आई है कि एक साहब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे पानी पीते वक्त बार बार सांस लेने की ज़रूरत पेश आती है, मैं किस तरह सांस लिया करूँ? आपने फरमाया कि जिस वक्त सांस लेने की ज़रूरत हो उस वक्त जिस गिलास या प्याले में तुम पानी पी रहे हो उसको अपने मुँह से अलग करके सांस ले लो और फिर पानी पी लो, लेकिन पानी पीने के बीच बरतन और गिलास के अन्दर सांस लेना और फुनकारे

मारना, अदब के खिलाफ़ है, और सुन्नत के खिलाफ़ है।

### एक अमल में कई सुन्नतों का सवाब:-

हमारे डॉक्टर अब्दुल हई आरिफ़ी रही फरमाते हैं, कि सुन्नतों पर अमल करने की नीयत करना लूट का माल है, मतलब यह है कि एक अमल के अन्दर जितनी सुन्नतों की नीयत कर लोगो, उतनी सुन्नतों का सवाब हासिल हो जायेगा। उदाहरणतः पानी पीते समय यह नीयत कर लो कि मैं तीन सांस में पानी इसलिए पी रहा हूँ कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदत शरीफ़ा तीन सांस में पीने की थी, इस सुन्नत का सवाब हासिल हो गया, इसी तरह यह नीयत कर ली कि मैं सांस लेते वक्त बरतन को इसलिए मुँह से हटा रहा हूँ कि हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बरतन में सांस लेने से मना फरमाया है। अब दूसरी सुन्नत पर अमल का सवाब हासिल हो गया है इसलिए सुन्नतों का इल्म हासिल करना ज़रूरी है, ताकि आदमी जब कोई अमल करे तो एक ही अमल के अन्दर जितनी सुन्नतें हैं, उन सबका ध्यान और ख्याल रखे,

और उनकी नीयत करे तो फिर हर हर नीयत के साथ इनशाअल्लाह निरन्तर सुन्नत का सवाब हासिल हो जायेगा।



### रोज़ों का फ़िदया

-इदारा

अगर कोई इतना बूढ़ा हो जाए कि वह रोज़ा नहीं रख सकता या उसको कोई ऐसी बीमारी है कि अब बचने की उम्मीद नहीं है, वह अपनी तरफ़ से रोज़े का फ़िदया दे सकता है। वह अपने घर वालों से कहे कि उसके रोज़ों का फ़िदया अदा करें। एक रोज़े के फ़िदये में पौने दो सेर गेहूँ या उसकी कीमत मुहताज़ को दें। यानी सदक़—ए—फ़ित्र के बराबर दें। या एक मुहताज़ को दोनों वक्त पेट भर खाना खिलाएं। बीमार अच्छा हो जाए तो रोज़े क़ज़ा करने पड़ेंगे। रोज़ा छोड़ने वाले अल्लाह की पकड़ से डरें।

# ईदुल फित्र खुशी का दिन

मुफ़्ती रहमतुल्लाह नदवी

“ईद” ऐसी खुशी और उल्लास को कहते हैं जो बार-बार लौट कर आये, और “फित्र” रोज़ा तोड़ने और ख़त्म करने को कहते हैं इस दिन रोज़ा रखना उसी तरह हराम है जिस तरह रोज़े के दिनों में बिना किसी शरई उज्ज के रोज़ा छोड़ना हराम है। रमज़ान का हर साल आना, और उसके गुज़रने के बाद अल्लाह तआला का उस दिन अपने बंदों को बार बार खुशी का परवाना दिये जाने और बहुत से इनआमात किये जाने की वजह से ही इसे खुशी और ईद का दिन कहते हैं उस दिन मुसलमानों से कहा जाता है कि अब तुम बख्शो बख्शाये अपने घरों को लौट जाओ।

ईद, और खुशी का यह दिन मुसलमानों का सबसे महत्वपूर्ण मजहबी और सामाजिक त्यौहार है, जो हर साल एक शब्वालुलमुकर्म को इंतिहाई अकीदत एहतिराम, जोश-खरोश, शौक-जज्बे से मनाया जाता है, स्पष्ट रहे कि इस्लाम में दो ही ईदें हैं – (1) ईदुल फित्र (2) ईदुल अज़हा, और जुमे को हफ़तावारी ईद कहा गया है, इनके अलावा कोई ईद नहीं, इसलिए किसी और ईद को मनाना या किसी दिन को ईद करार देना सही नहीं है।

हुजूर सल्ल0 जब हिजरत करके मदीना तशरीफ लाये तो यहाँ के लोगों को खेल तमाशा करते देखा, पूछने पर मालूम हुआ कि यह उनकी ईद का दिन है जो जाहिलियत के दौर से मनाते चले आ रहे हैं, आप सल्ल0 ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने हमको इससे बेहतर दो दिन दिये हैं एक ईदुल फित्र और दूसरा ईदुल अज़हा, यह खुशी का दिन फर्ज रोजों को पूरा कर लेने की खुशी में है जो प्राकृतिक है क्योंकि कोई भी काम पूरा करने के बाद इन्सान को अन्दर से खुशी महसूस होती है तो एक माह के लगातार रोजों के पूरा कर लेने पर खुशी क्यों न हो?

याद रहे कि ईद सिर्फ नया और शानदार कपड़े पहनने, खुशबू लगाने, धूनी देने, देगें चढ़ाने, कालीन व गालीचों से घरों को सजाने का नाम नहीं, बल्कि ईद अल्लाह से डरने, तौबा व इस्तेगफार करने गुनाहों को छोड़ने और परहेज़गारी को अपने अन्दर पैदा करने का नाम है।

हज़रत अली रज़ि0 का इरशाद है कि मोमिन के लिए हर वह दिन ईद है जिस दिन वह कोई गुनाह न करे, सच है ईद तो उसकी है जो अल्लाह की इताअत करे, और हर रोज उसमें आगे बढ़ता जाये।

ईद मनाने की भी कुछ सीमायें और बंदिशें हैं जिनका ख्याल रखना बहुत ज़रूरी है, खुशी का दिन मनाने का हरगिज़ यह मतलब नहीं कि दूसरे मज़हब वालों की तरह हम बिल्कुल आज़ाद और बेलगाम हो जायें, इसी लिए इस्लाम ने हमें अल्लाह के लिए दो रकअत शुकराना अदा करके अल्लाह की बंदगी जाहिर करने का हुक्म दिया है और ईद के बाद भी शरीयत की पाबन्दियां हम पर लागू रहती हैं जिनसे मरते दम तक हम आज़ाद नहीं हो सकते। अल्लाह तआला ईद की खुशियाँ तमाम मुसलमानों को विश्वस्तर पर नसीब फरमाये और उनके लिए मुबारक बनाये।

आमीन



# ਤੰਦੂ ਸੀਰਖਾਂ—ਇਦਾਰਾ

ਨੀਚੇ ਲਿਖੇ ਤੰਦੂ ਕੇ ਜੁਮਲੇ ਪਢਿਧੇ,  
ਮੁਝਿਕਲ ਆਨੇ ਪਰ ਬਾਦ ਮੈਂ ਲਿਖੇ ਹਿੰਦੀ ਜੁਮਲੇ ਸੇ ਮਦਦ ਲੀਜਿਏ

رحمਤ، برکت، مغفرت ਕਾ ਮੰਨੀਨਾ ਆਂਗਿਆ  
رمضان ہی میں قرآن نازل کیا گیا  
رمضان کے روزے ہر مسلمان پرفرض ہیں  
اللہ کا حکم مانو اور رمضان کے روزے رکھو  
جان بوجھ کر روزہ ہر گز نہ چھੋڑو  
روز آنہ قرآن کی تلاوت کرو  
اور اللہ سے دعائیں مانگو  
اللہ نے مال دیا ہے تو غریبوں کی مدد کرو  
نماز اور تراویح کا خوب اہتمام کرو  
رمضان کا ایک ایک لمحہ قیمتی ہے  
اس کو برباد ہونے سے بچائیں

رਹਮਤ، ਬਰਕਤ، ਮਗਫ਼ਿਰਤ ਕਾ ਮਹੀਨਾ ਆ ਗਿਆ  
ਰਮਜ਼ਾਨ ਹੀ ਮੈਂ ਕੁਰੀਅਨ ਨਾਜ਼ਿਲ ਕਿਯਾ ਗਿਆ  
ਰਮਜ਼ਾਨ ਕੇ ਰੋਜ਼ੇ ਹਰ ਮੁਸਲਮਾਨ ਪਰ ਫ਼ਰਜ਼ ਹਨ੍ਹੈਂ  
ਅਲਲਾਹ ਕਾ ਹੁਕਮ ਮਾਨੋ ਔਰ ਰਮਜ਼ਾਨ ਕੇ ਰੋਜ਼ੇ ਰਖੋ  
ਜਾਨ ਬੂਜਾ ਕਰ ਰੋਜਾ ਹਰਗਿਜ਼ ਨ ਛੋਡੋ  
ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਕੁਰੀਅਨ ਕੀ ਤਿਲਾਵਤ ਕਰੋ  
ਔਰ ਅਲਲਾਹ ਸੇ ਦੁਆਯੇ ਮਾਂਗੋ  
ਅਲਲਾਹ ਨੇ ਮਾਲ ਦਿਯਾ ਹੈ ਤੋ ਗੁਰੀਬਾਂ ਕੀ ਮਦਦ ਕਰੋ  
ਨਮਾਜ਼ ਔਰ ਤਰਾਵੀਹ ਕਾ ਖੂਬ ਏਹਤਿਮਾਮ ਕਰੋ  
ਰਮਜ਼ਾਨ ਕਾ ਏਕ ਏਕ ਲਮਹਾ ਕੀਮਤੀ ਹੈ  
ਉਸਕੋ ਬਾਬਦ ਹੋਨੇ ਸੇ ਬਚਾਯੋ

## नदवतुल उलमा

पोस्ट बाक्स नं 93, टैगेर मार्ग,  
लखनऊ -226007 (भारत)



نَدْوَةُ الْعُلَمَاءِ  
پوسٹ بکس ۹۳۔ ٹیگر مارگ  
(لکھنؤ۔ ۲۲۶۰۰۷) (بھارت)  
تاریخ

दिनांक 25/12/2021

## स्टॉफ क्वार्टर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मोहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती खिदमत अंजाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वार्टर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्डिंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वार्टर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वार्टर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरू कर दी गयी है। नये स्टॉफ क्वार्टर्स की यह बिल्डिंग तीन मंज़िला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वार्टर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/- (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हुई हसनी नदवी

नाजिरे आम नदवतुल उलमा

डॉ मुहम्मद असलम सिद्दीकी

मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ) तकीउद्दीन नदवी  
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी  
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोट: चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:

NADWATUL ULAMA

और इस पते पर भेजें:

NAZIM NADWATUL ULAMA

Nizamat Office, Nadwatul Ulama.  
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा-ए-करम  
अतियात भेजने  
के बाद रसीद  
हासिल करने  
के लिए नं ०  
7275265518  
पर इतिला  
ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा

STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW

(IFSC: SBIN0000125)

—तामीर—

A/C No. 10863759733

नोट: नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।  
Online Donation Link: <https://www.nadwa.in.donation/> Website: [www.madwa.in](http://www.madwa.in), Email: [nizamat@nadwa.in](mailto:nizamat@nadwa.in)

# अहले रखेर हज़ारात की रिपोर्ट में

एमजानुल मुबारक 2022 में नदवतुल उलमा के लिए माली तआवुन हासिल करने की गरज से जिन असातिजह, कारकुनान व मुहसिसलीन को जिस शहर या झलाके में भैजा जा रहा है, उसकी तपशील नीचे दी जा रही है, अहले खैर हज़ारात से तआवुन की दरख़वास्त है।

—मौलाना फ़खरुल हसन खाँ नदवी,

(नाजिर शो-बए-तामीर व तरकी नदवतुल उलमा, लखनऊ)

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं०	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
1	कारी फ़ज्जुरुर्हमान साठ नदवी	9919490477	उस्ताद हिफ़्ज़	मुम्बई
2	हाफिज अब्दुल वासे साहब	9307884504	उस्ताद हिफ़्ज़	मुम्बई, भिवन्डी, मालेगांव
3	मौ० अब्दुल वकील साहब नदवी	9889840219	कारकुन शो-बए-इस्लाह मुआशरा	मुम्बई
4	मौ० मुहम्मद इस्माइल साठ नदवी	8604346170	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	मुम्बई
5	मौ० अब्दुल्लाह साहब नदवी	7499549301	कारकुन द० दारूल उलूम	मुम्बई न्यु मुम्बई
6	मौ० मुहम्मद असलम साहब मजाहिरी	9935219730	उस्ताद दारूल उलूम	मद्रास, विजयवाड़ा
7	मौ० मुहम्मद इरफान साठ नदवी	7505873005	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	मद्रास, विजयवाड़ा
8	मौ० मुहम्मद कैसर हुसैन साहब नदवी	7897254496	उस्ताद दारूल उलूम	नवसारी, सूरत, धौलिया, वापी, बेलसाड़
9	मौ० शफीक अहमद साहब बांदवी नदवी	9935997860	उस्ताद माहद दारूल उलूम (सिकरौरी)	पट्टन, पालनपुर व अतराफ
10	मौ० शमीम अहमद साहब नदवी	9935987423	उस्ताद दारूल उलूम	हैदराबाद, निजामाबाद, नान्देड़
11	मौ० अनीस अहमद साहब नदवी	9450573107	उस्ताद दारूल उलूम	भटकल, शिमूगा टुमकूर, मन्की, मुरड़े श्वर
12	मौ० रशीद अहमद साहब नदवी	7795864313	उस्ताद दारूल उलूम	बंगलूर
13	मौ० जुहैर अहसन साहब नदवी	9889258560	उस्ताद माहद (सिकरौरी)	बंगलूर
14	मौ० मुफ्ती मु० मुस्तकीम साठन०	9889096140	उस्ताद दारूल उलूम	आसनसोल, कोलकाता
15	मौ० मुफ्ती साजिद अली साठ नदवी	8960204060	मुआविन इल्मी दारूलकज़ा	आसनसोल, कोलकाता
16	कारी अब्दुल्लाह खाँ साठ नदवी	9839748267	उस्ताद तजवीद दारूलउलूम	देहली
17	मौ० मुहम्मद शुऐब नदवी	6394260480	मुहसिसल शोबा	बनारस, भदोही, मिरजापुर
18	मौ० मसऊद अहमद साठ नदवी	9795715987	उस्ताद माहद (सिकरौरी)	कानपुर
19	मौ० शकील अहमद साठ नदवी	9305418153	कारकुन शिल्पी लाइब्रेरी	इलाहाबाद
20	मौ० मुहम्मद अमजद साठ नदवी	9616514320	उस्ताद दारूल उलूम	संभल व अतराफ

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं०	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
21	मौ० जमाल अहमद साहब नदवी	9450784350 9807494150	कारकुन शो-बए-दावत व इरशाद	सुल्तानपुर, अमेठी व मुगलसराय
22	बिस्मिल्लाह खाँ साहब	9935169540	कारकुन माहद (सिकरौरी)	गोंडा, बहराइच, बलरामपुर, श्रावस्ती
23	मौ० मुहम्मद नसीम साहब नदवी	9670049411	उस्ताद माहद (महपतमज)	कानपुर, सन्डीला, गौसगंज, शाहजहांपुर
24	मौ० बशीरुद्दीन साहब	9889438910	उस्ताद मक्तब	लखनऊ शहर
25	मौ० इमितयाज साहब नदवी	9984070892	उस्ताद माहद (महपतमज)	लखनऊ शहर
26	हाफिज़ मुबीन अहमद साहब	9839588696	उस्ताद मक्तब	लखनऊ शहर
27	मौ० अब्दुल मतीन साहब नदवी	9450970865	उस्ताद दारूल उलूम	रामपुर, अमरोहा, मुरादाबाद
28	मौ० मु० इकराम साहब नदवी	9839840206	मुहस्सिल शोबा	आसनसोल, कोलकाता
29	मौ० शरफुद्दीन साहब नदवी	9936740835	मुहस्सिल शोबा	नागपुर, भोपाल, कानपुर
30	कारी माजिद अली साहब नदवी	9935626993	मुहस्सिल शोबा	सीतापुर, इन्दौर, उज्जैन
31	मौ० साजिद अली साहब नदवी	8400015009	मुहस्सिल शोबा	कर्नाटक, आंबूर व गाजियाबाद
32	मौ० अलीमुल्लाह साहब नदवी	9721413704	मुहस्सिल शोबा	मुम्बई, बस्ती, गोण्डा
33	मौ० मुहम्मद रिजवान साहब कासमी	8401801990	मुहस्सिल शोबा	अहमदाबाद व दीगर अजला गुजरात
34	हाफिज़ अमीन असगुर साहब	9161219358	मुहस्सिल शोबा	अलीगढ़, आगरा, सहारनपुर, फिरोजाबाद, बुलन्दशहर, सिकन्द्राबाद
35	मौ० अलीमुद्दीन साहब नदवी	8853258362	मुहस्सिल शोबा	खन्डवा, रतनागिरी, पूना, सितारा, कोल्हापुर
36	मौ० मुहम्मद मुस्लिम साहब मजाहिरी	8960513186	मुहस्सिल शोबा	औरंगाबाद, जालना, पूना, अहमदनगर, मुजफ्फरनगर, बनारस, मेरठ, बिजनौर, नजीबाबाद
37	डॉ० मुहम्मद असलम साहब नदवी	9956223293	उस्ताद माहद	पट्टन व आस पास
38	मौ० अब्दुर्रहीम साहब नदवी	7388509803	मुहस्सिल शोबा	बाराबंकी, झांसी, मऊ, आजमगढ़ व अतराफ
39	मौ० अब्दुल माजिद खाँ साहब	9918005726	मुहस्सिल शोबा	देहली
40	मौ० मुहम्मद अकील साहब नदवी	9389868121	उस्ताद मक्तब शहर	सीवान, चम्पारन, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं०	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
41	मौ० अबुल हयात सा० नदवी	9795891123	उस्ताद मक्तब शहर	पटना व अतराफ
42	मौ० अब्दुल कबीर साहब फारूकी	8853677677	उस्ताद मक्तब (महपतमज)	काकोरी व अतराफ लखनऊ
43	मौ० मु० मुशताक साहब नदवी	9415102947	नाइब मुहतमिम (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ, कानपुर
44	हाफिज बख्शिश करीम साहब	7388324879	उस्ताद हिफ़्ज़ (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	मुम्बई, पश्चिमी लखनऊ
45	कारी मुहम्मद सालिम साहब	9889735087	निगरां तामीरात	मुम्बई, पुराना लखनऊ
46	मौ० अब्दुर्रुक्फ साहब नदवी	9336096921	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	कानपुर, मगरबी लखनऊ, बनारस, भदोही
47	मौ० फहरान आलम साहब नदवी	9235711407	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	बस्ती, लखनऊ
48	मौ० अशरफ अली रशीदी साहब	7505526255	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ
49	मौ० लुकमान साहब नदवी	9616593360	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ, कानपुर, बाराबंकी
50	मौ० सरताज अहमद साहब कासमी	9889026124	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ
51	मौ० सईद अन्जुम साहब	9305902746	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ
52	डॉ० मुहीउद्दीन साहब	9415766507	उस्ताद (मदरसा मज़हरुल इस्लाम)	लखनऊ
53	हाफिज नजमुद्दीन साहब	9616624133	उस्ताद मक्तब	लखनऊ
54	हाफिज जलील अहमद साहब	9956492163	उस्ताद मक्तब	लखनऊ
55	मास्टर जमाली आसी साहब	9336048990	उस्ताद मक्तब	लखनऊ, कानपुर
56	हाफिज रकीमुद्दीन साहब नदवी	9621040705	कारकुन कुतुब खाना	लखनऊ
57	कारी लियाकत साहब	9450367182	उस्ताद हिफ़्ज़	लखनऊ

बरा—ए—करम  
अतियात भेजने  
के बाद रसीद  
हासिल करने  
के लिए नं०  
7275265518  
पर इत्तिला  
ज़रूर करें।

ACCOUNTS NO. NADWATUL ULAMA

ZAKAT : 10863759766
ATIA : 10863759711
BUILDING : 10863759733
IFSC : SBIN0000125

STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH LUCKNOW

नोट: चेक / झाप्ट पर केवल यह लिखें:  
**NADWATUL ULAMA**  
और इस पते पर भेजें:  
**NAZIM NADWATUL ULAMA**  
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.  
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

नोट: नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।  
Online Donation Link: <https://www.nadwa.in.donation/> Website: [www.madwa.in](http://www.madwa.in), Email: [nizamat@nadwa.in](mailto:nizamat@nadwa.in)

RNI No. UPHIN/2002/0795  
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023  
Dispatch Date : 1 & 5  
Published of 27th Advance Month  
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY  
**SACHCHA RAHI**  
Vol. 21 - Issue 02

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM  
Tel.: (0522) 2740406  
ISSN No. : 2582-4007  
<http://sachcha-rahi.nadwa.in>  
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com



**R.K. JEWELLERS**  
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan  
Haji Mohd. Faheem Khan  
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,  
Chowk, Lucknow - 226003  
Ph.: 0522-2267910  
+91-9415108039



**R. K. CLINIC & RESEARCH CENTRE**

**Dr. Mohammad Fahad Khan**  
M.D.

**विशेषज्ञ**

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एप्झ्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

**24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE**

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow  
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

REFLECTIVE BACK SURFACE